thearyasamaj.org

ओ३म्

संघुतेन गमेमहि मा श्रुतेन विराधिषि

परोपकारिणी
दयानन्दसरस्वती

पाक्षिक

परोपकारी

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

वर्ष - ५७ अंक - १० महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र मई (द्वितीय) २०१५

महर्षि दयानन्द सरस्वती

thearyasamaj.org

thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र

वर्ष : ५७ अंक : १०
दयानन्दाब्द: १९१
विक्रम संवत्: ज्येष्ठ कृष्ण, २०७२
कलि संवत्: ५११६
सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११६

सम्पादक
प्रो. धर्मवीर

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

-परोपकारी का शुल्क-

भारत में

वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु., **त्रिवार्षिक**-५८० रु., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।

विदेश में

वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस. डालर, **द्विवार्षिक**-९५ पा./१५२ डा., **त्रिवार्षिक**-१४० पा./२२५ डा., आजीवन-(=१५ वर्ष)-५०० पा./८०० डा.।

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०

ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षा:,
सत्यव्रता रहितमानमलापहारा:।
संसारदु:खदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकारा:।।

RNI. No. ३९५९/५९

परोपकारी

मई द्वितीय २०१५

अनुक्रम

१. नेपाल त्रासदी और हमारा कर्त्तव्य	सम्पादकीय	०४
२. स्वरसवाही विदुषोऽपि तथा......	स्वामी विष्वङ्	०७
३. कुछ तड़प-कुछ झड़प	राजेन्द्र जिज्ञासु	१३
६. वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन		१८
७. ऊमर काव्य	ऊमरदान लालस	२०
८. अग्निहोत्र का आध्यात्मिक एवं....	प्रो. डी.के. माहेश्वरी	२४
७. हमारा परम मित्र - ईश्वर	सुकामा आर्या	२९
७. तो क्या?	संजय शास्त्री	३१
४. पुस्तक-समीक्षा	प्रो. महावीर अग्रवाल	३५
९. स्तुता मया वरदा वेदमाता-१०		३६
१०. संस्था-समाचार		३७
१२. जिज्ञासा समाधान-८७	आचार्य सोमदेव	४१
१३. आर्यजगत् के समाचार		४२

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं -
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

thearyasamaj.org

नेपाल त्रासदी और हमारा कर्त्तव्य

दुर्घटनाएँ संसार में घटती रहती हैं। कभी ये मनुष्यकृत होती हैं तो कभी प्राकृतिक रूप में आती हैं। पिछले दिनों भारत में २७ मार्च को दोपहर के समय भूकम्प के झटकों का अनुभव किया गया। इसका केन्द्र नेपाल में था, अत: इसका प्रभाव नेपाल में अधिक हुआ। एक तो नेपाल में केन्द्र था, दूसरा भूकम्प की तीव्रता का नाप ७.८ था, जो बहुत अधिक था, इसी अनुपात से दुर्घटना का प्रभाव भी उतना ही तीव्र का हुआ। जहाँ हजारों मकान ध्वस्त हो गये, वहाँ अभी तक दस हजार से अधिक लोगों के मरने का अनुमान है। हताहत होने वालों की संख्या कई गुना अधिक है।

इस समय दुर्घटना तो प्राकृतिक थी, परन्तु मनुष्यों द्वारा की जाने वाली क्रिया भी आज चर्चा का विषय है। इस दुर्घटना को जिन्होंने भोगा, अनुभव किया, उनका दु:ख अवर्णनीय है। उसे तो वे ही अनुभव कर सकते हैं परन्तु समाज में दूसरे लोग जो इस दु:ख का अनुभव कर सकते हैं, वे ही इस कार्य में सहायता के लिये आगे बढ़ते हैं। यह प्रसन्नता और गर्व की बात है कि प्रधानमन्त्री मोदी और उनकी सरकार ने इस मानवीय संवेदना का परिचय दिया, उससे विश्व में भारत की प्रतिष्ठा बढ़ी है। इससे संवेदनशीलता, तत्परता एवं बुद्धिमत्ता का परिचय मिलता है। हमारे ऋषियों ने मनुष्य जीवन में आने वाली समस्याओं का समाधान किया है। समस्या के समाधान को धर्म कहा गया है। जहाँ कहीं समस्या है, वहाँ उसके समाधान के रूप में धर्म उपस्थित होता है। हमारी संस्कृति में सेवा कार्य को धर्म कहा गया है। इससे पता लगता है कि सेवा एक अनिवार्य कार्य है और समस्या का समाधान भी।

इस बात को हम ऐसे समझ सकते हैं। जब मनुष्य समर्थ होता है, युवा होता है, सम्पन्न होता है तो वह समझता है कि मुझे किसी से क्या लेना है, मैं अपने पुरुषार्थ से जो अर्थोपार्जन करता हूँ, वह मेरा है, मैं उसका अपने लिये उपयोग करता हूँ। जैसे मैं अपने उपार्जित धन से अपना काम करता हूँ, उसी प्रकार सबको अपने धन से अपना काम चलाना चाहिए। मैं किसी के लिये कैसे उत्तरदायी हूँ? यह एक बुद्धिमान् व्यक्ति का विचार नहीं हो सकता। मनुष्य जीवन में सदा समर्थ और सम्पन्न नहीं रहता। पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय जी ने अपनी आत्मकथा में एक प्रसंग लिखा है कि - मैं पचहत्तर वर्ष की आयु में रोगी हो गया। रोग का आक्रमण लम्बा रहा, शरीर अत्यन्त निर्बल हो गया, परिणामस्वरूप खाना-पीना भी मेरे लिए स्वयं करना सम्भव नहीं रहा। जब मेरे परिवार के लोगों ने मुझे चम्मच से खिलाया, तब मुझे लगा कि केवल बच्चों को ही चम्मच से नहीं खिलाया जाता, बुढ़ापे में भी चम्मच से खिलाना पड़ता है। मनुष्य स्वस्थ, समर्थ एवं सम्पन्न होता है तब उसे किसी की आवश्यकता नहीं लगती परन्तु प्रत्येक मनुष्य के जीवन में शैशवावस्था, रुग्णावस्था, रोग और वृद्धावस्था आती है। इन तीनों के अतिरिक्त दुर्घटना कब, किसके जीवन में आये? नहीं कहा जा सकता। समाज में इन परिस्थितियों में मनुष्य को दूसरों की सहायता की आवश्यकता होती है। शैशव में मनुष्य के बालक का उत्पन्न होने के पश्चात् अकेले जीवित रहना असम्भव है। उसको बचाने के लिए माता-पिता, पालक की आवश्यकता होती है।

हम बचपन से किन-किन की सहायता से जीवित बचे हैं, इसकी हम कल्पना नहीं कर सकते। खाना-पीना, उठना-बैठना, चलना-बोलना, वस्त्र पहनना आदि समस्त जीवन व्यापार दूसरों के आधीन ही होता है। दूसरों की सहायता के बिना हमारा जीवित रहना सम्भव नहीं है। इस प्रकार वृद्धावस्था में हम कितने भी सम्पन्न हों, अशक्त होने की दशा में हमें दूसरों की सहायता की आवश्यकता पड़ती है। जब कभी रोग, शोक, भय आदि से आक्रान्त हो जाते हैं, तब हमारे जीवन में दुर्घटना कब, कहाँ घटित हो जाये, यह निश्चित नहीं। आज समुद्र में तूफान आते हैं, आँधियाँ आती हैं, बाढ़ आती है, सूखा पड़ता है, भूकम्प आता है, वायुयान, रेल, बस आदि की दुर्घटनाएँ होती हैं, आग लग जाती है। ये सब हमारे सामर्थ्य को एक क्षण में व्यर्थ कर देते हैं। हमारी सम्पत्ति हमारे लिए निरर्थक हो जाती है। हमारी सम्पत्ति से एक घूँट पानी हम नहीं प्राप्त कर सकते, जेब और बैंक में रखा हुआ धन हमारी असहाय स्थिति को दूर करने का सामर्थ्य खो देता है। इस परिस्थिति में हमारे बचने का क्या उपाय शेष रहता है- वह उपाय है दूसरों के द्वारा दी जाने वाली सहायता, जिसे हम सेवा के

thearyasamaj.org

रूप में जानते हैं।

सेवा की अनिवार्यता तब समझ में आती है, जब व्यक्ति विवश होता है। मनुष्य किसी स्थान या व्यक्ति से परिचित न हो, भाषा भी न आती हो और जेब में पैसे भी न हों, तब व्यक्ति कैसे जीवित रहेगा? एक विकल्प तो यह है कि ऐसा व्यक्ति मर जाये तो हमारा क्या दोष है? इसके उत्तर में विचार करना चाहिए कि क्या यह परिस्थिति किसी के साथ ही आती है या यह परिस्थिति सबके साथ आ सकती है? तो इसका उत्तर है, यह परिस्थिति किसी के भी जीवन में कभी भी आ सकती है। तो इसका उपाय क्या है? इसका उपाय यह है कि जो भी व्यक्ति वहाँ उपस्थित है, वही हमारी सहायता करे, परन्तु कोई व्यक्ति आपकी सहायता क्यों करे? यहीं उत्तर है कि सेवा करना धर्म है, अत: उस व्यक्ति की सहायता की जानी चाहिए। सामान्य रूप में सभी व्यक्ति एक दूसरे की सहायता या आवश्यकता की पूर्ति करते हैं। यह पूर्ति का प्रकार दो प्रकार का हो सकता है। हम रेल में यात्रा कर रहे हैं। हमें प्यास लगती है, हम जेब से पैसे निकालते हैं, पानी वाले को देते हैं, वह हमें पानी दे देता है। उसने भी हमारी आवश्यकता की पूर्ति की है। इस कार्य के बदल में कोई कह सकता है कि मैं सेवा कर रहा हूँ, परन्तु यह सेवा नहीं है। सेवा में धन होने की अनिवार्यता नहीं है।

जब हम किसी कार्य को धर्म समझकर करते हैं तो उसमें व्यक्ति की पात्रता, उसकी आवश्यकता पर निर्भर करती है, जबकि व्यवसाय में पात्रता उसकी आवश्यकता पर नहीं, अपितु उसकी आर्थिक सामर्थ्य पर टिकी है। सेवा करने वाला व्यक्ति केवल आवश्यकता को, उसकी पीड़ा को देखता है, जबकि व्यवसाय करने वाला व्यक्ति उसकी आर्थिक क्षमता को देखता है, उसका उसकी पीड़ा या आवश्यकता से कोई सम्बन्ध नहीं होता। सेवा का उत्कृष्ट स्वरूप होता है जब हम प्राणि मात्र को उसकी पीड़ा से पहचानते हैं, न कि जाति, लिंग, आकृति या हानि-लाभ से। भगवान् बुद्ध ने अपने शिष्यों को शिक्षा देकर प्रचार के लिए भेजा। एक शिष्य ने एक शराबी को देखकर उसे उपदेश देने का प्रयास किया, शराबी ने बोतल से उसका सिर तोड़ दिया। शिष्य ने गुरु जी के पास जाकर अपना हाल सुनाया, गुरु जी ने सुन लिया। उस समय कुछ न कहा फिर एक बार उसी शिष्य को लेकर उसी गाँव में गये, जहाँ वही शराबी रोग से दु:खी अकेला पड़ा था। भगवान् बुद्ध उसे उपदेश नहीं दिया, उसकी सेवा की, उसे साफ किया, उसको औषध दी, उसको भोजन-पानी दिया, वह शराबी भगवान् बुद्ध का शिष्य बन गया।

जिस क्षण हम सेवा के बदले में कुछ चाहते हैं, तो वह सौदा हो जाता है। नेपाल के प्रसंग में यह घटना याद करने योग्य है। चर्च ने भूकम्प के समय बाइबिल की एक लाख प्रतियाँ नेपाल में भेजी, यह किसी भी प्रकार से सेवा की श्रेणी में नहीं आता। यह तो मौके का फायदा उठाना है, यह व्यापार है, सौदा है। चर्च कहीं भी सेवा नहीं करता, इस प्रसंग में एक घटना का उल्लेख करना उचित होगा। ईसाई प्रचारक फादर लेसर अब स्वर्गीय हो गये, उन्होंने अपनी व्यथा व्यक्त करते हुए कहा था- हमने भारत में चार सौ वर्षों से सेवा का कार्य किया, परन्तु भारतीय समाज अभी तक हम पर विश्वास नहीं करता। इसके उत्तर में मैंने निवेदन किया कि फादर, ईसाई चर्च कभी भी सेवा कार्य नहीं करता, वह सदा सौदा करता है, वह बदले में ईमान माँगता है। उसके हर सेवा कार्य के पीछे ईसाई बनने की शर्त रहती है। जब कभी हम अपने कार्य के बदले में दूसरे से कुछ चाहते हैं तो वह सेवा न होकर सौदा, व्यापार हो जाता है। हमारे ऋषियों ने सेवा को धर्म कहा है। धर्म स्थान एवं व्यक्ति की योग्यता नहीं देखता, उसकी पात्रता केवल उसकी पीड़ा है और उसका निराकरण का प्रयास सेवा है।

संसार दु:खमय है, इसमें जन्म के साथ ही दु:खों का प्रारम्भ हो जाता है। हमारे मित्र, सहयोगी, सम्बन्धी मिलकर एक-दूसरे के दु:ख को दूर करने का प्रयास करते हैं, परन्तु जिनको जीवन में ये साधन नहीं मिले, उनका भी उपाय होना चाहिए, यह उनका अधिकार है। जब हम सेवा करते हैं, तब हम उस पर उपकार नहीं कर रहे होते। हमें उपकार का अवसर मिला है, हम आज पीड़ित नहीं, सेवक हैं। भारतीय संस्कृति में कोई भी कार्य निष्फल नहीं होता, सेवा कार्य भी नहीं। जैसे व्यापार का लाभ तत्काल होता है तो हम कर्म के लिए प्रेरित होते हैं, परन्तु हम भूल जाते हैं कि यदि व्यापार में किया गया कर्म निष्फल नहीं गया तो धर्म में किया गया कर्म कैसे निष्फल हो सकता है? धर्म कार्य में भी कार्य तो हुआ है, हमने इच्छा नहीं की कि हमें कोई पैसा मिले, कोई लाभ मिले, इस परिस्थिति में हमारे दो कार्य होते हैं और उसके दो फल मिलते हैं। एक फल हमारी बदले की इच्छा न होने से सन्तोष की

thearyasamaj.org

प्राप्ति और अनासक्ति का सुख मिलता है तथा जो हमारे दूसरे की सहायता का कार्य किया है, उसका लाभ हमें तब सहज ही प्राप्त होता है, जब कभी हम किसी संकट या विपत्ति में फँस जाते हैं और कहीं से अज्ञात हाथ आकर हमारी रक्षा करते हैं, हमें बचा लेते हैं। व्यापार के फल को हम जानते हैं कि वह कब मिलेगा, कहाँ मिलेगा, कितना मिलेगा? परन्तु धर्म का फल कहाँ किसको कब मिलेगा हमें पता नहीं चलता। सबको धार्मिक होने की इसीलिये आवश्यकता है कि सभी धार्मिक होंगे, सेवा भावी होंगे तो कोई भी कहीं भी कष्ट में क्यों न हो, जो व्यक्ति जहाँ उपस्थित है, उसके मन में सेवा भाव होगा वह तत्काल सेवा कार्य में जुट जायेगा।

हमें स्मरण रखना चाहिए कि जब हम दु:ख में होते हैं, तब परमेश्वर से सहायता की याचना करते हैं। हमें स्मरण रखना होगा कि हर प्राणी उस परमेश्वर की ही सन्तान है, किसी पीड़ित प्राणी की सेवा करना परमेश्वर को प्रसन्न करने का उपाय है। आज कोई व्यक्ति दु:खी को लूटता है, हिंसा करता है, उसकी उपेक्षा करता है तो वह पापी बन जाता है, लोग अपनी पापवृत्ति के कारण बेहोश, मरे, पीड़ित व्यक्ति की सम्पत्ति लूटते हैं, चुराते हैं तो वे किस प्रकार अपने लिए दूसरे की सहायता मिलने की अपेक्षा कर सकते हैं? बहुत सारे लोग इन आपदाओं के लिए परमेश्वर को उत्तरदायी मानते हैं। परमेश्वर उत्तरदायी इसलिये नहीं है कि संसार उसकी व्यवस्था में चल रहा है। जहाँ भी, जब भी व्यवस्था में व्यतिक्रम होता है तो संकट आता है, बहुत बार यह अव्यवस्था के कारण का हमें पता चलता है और बहुत बार हमें पता नहीं चलता। अधिकांश रूप में हम अपनी आवश्यकता और स्वार्थ की पूर्ति के लिए नियमों को तोड़ते हैं, व्यवस्था को भंग करते हैं।

हम वृक्षों को तोड़कर, जलधाराओं को मोड़कर पर्यावरण के सन्तुलन को बिगाड़ देते हैं। स्वार्थ के लिये बड़ी मात्रा में हिंसा करते हैं। जहाँ जड़ पदार्थों के उचित क्रम और व्यवस्था को बिगाड़ना हिंसा है, वहीं प्राणियों का निरन्तर वध करना हिंसा है। उसका हमारे जीवन और पर्यावरण पर प्रभाव पड़े बिना नहीं रह सकता। नेपाल में धर्म के नाम पर जितनी जीव हत्या होती है, क्या उसके दण्ड से आप बच सकते हैं? आप पीड़ा नहीं चाहते, आप पीड़ा देने वाले को अपराधी मानते हैं, उसे दण्डित करना चहाते हैं तो क्या निरीह पशुओं को अकारण धर्म के नाम से क्रूरता से संहार करके आप सुरक्षित रह सकते हैं? आज वैज्ञानिकों ने प्रमाणित किया कि प्राणियों की निरन्तर बढ़ती हुई हिंसा वातावरण में भारी उथल-पुथल का कारण है। इसी कारण भूकम्प और प्राकृतिक आपदाएँ आती हैं। पशु प्राणी सृष्टि-संरचना में एक महत्त्वपूर्ण कड़ी है। उसके न रहने पर या क्षतिग्रस्त होने पर समस्त पर्यावरण प्रभावित होता है। हिंसा से मनुष्य में तमोगुण, बढ़कर क्रोध, तनाव, भय, आतंक आदि उत्पन्न करता है। इससे मनुष्य का मन-मस्तिष्क विकृत होकर उसे रोगी, अस्थिरचित्त एवं दुर्बल बना देती है।

केदारनाथ, नेपाल आदि की घटनाओं का वैज्ञानिक अध्ययन करके उनके कारणों का हमें पता लगाना चाहिए। अहिंसा, सत्य, अस्तेय आदि के पालन से आत्मा में शान्ति, मन में स्थिरता व बुद्धि में सतोगुण बढ़ता है। हिंसा से स्वार्थ एवं परहानि की प्रवृत्ति बढ़ती है। नेपाल में पशुपतिनाथ के नाम पर हम भैंसों-बकरों की बलि चढ़ा कर शान्ति से रहना चाहेंगे, यह सम्भव नहीं होगा। जीवन में से किसी भी प्रकार की हिंसा को दूर किये बिना मनुष्य का सुखी होना सम्भव नहीं है। परोपकार सेवा ही पुण्य है और हिंसा तथा स्वार्थ के लिए परहानि करना ही पाप है। प्रकृति की प्राणियों की हिंसा जबतक बढ़ती रहेगी, समाज का सन्ताप, कष्ट, आपत्तियाँ भी बढ़ती रहेंगी, अत: कहा गया है- पुण्य से सुख मिलता है और पाप से दु:ख परोपकार पुण्य है और परपीड़न पाप है-

परोपकार: पुण्याय पापाय परपीडनम्।।

- धर्मवीर

मनुष्यों को उचित है कि परमेश्वर में ही मन बुद्धि को युक्त कर विद्वानों के सङ्ग से विद्या को पा सुखी हो अन्य मनुष्यों को भी इसी प्रकार आनन्दित करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.१४

जैसे विद्वान् लोग ईश्वर की सृष्टि में विद्या से पदार्थों की परीक्षा करके कार्य्यों में उपयोग कर सुखों को प्राप्त करते हैं वैसे ही सब मनुष्यों को इस यज्ञ का अनुष्ठान कर सब सुखों को पहुँचना चाहिये।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.२२

thearyasamaj.org

स्वरसवाही विदुषोऽपि तथा रूढोऽभिनिवेशः-९

- स्वामी विष्वङ्

क्लेशों के पाँच विभागों में से चार विभागों (अविद्या, अस्मिता, राग और द्वेष) की परिभाषाएँ बताकर महर्षि पतञ्जलि अन्तिम पाँचवें विभाग की चर्चा प्रस्तुत सूत्र में कर रहे हैं। महर्षि कहते हैं- प्रवाह (परम्परा) से चला आ रहा, यह मृत्यु का डर सर्वसाधारण मनुष्यों में तो रहता ही है, परन्तु विद्वानों में भी निरन्तर बना रहता है। इस मृत्युभय को ही अभिनिवेश नाम से कहा जाता है। यहाँ महर्षि ने 'स्वरसवाही' शब्द का प्रयोग किया है। स्वरस का अभिप्राय है- **स्वभाव** और वाही का अभिप्राय **बनाये रखना**, इस प्रकार स्वभाव को बनाया रखना अर्थ प्रकट होता है। स्वभाव दो प्रकार का होता है- एक नित्य स्वभाव और दूसरा अनित्य स्वभाव। यहाँ अनित्य स्वभाव को लिया गया है और यह अनित्य स्वभाव परम्परा से निरन्तर चला आ रहा है। इस कारण इसे प्रवाह से अनादि कहते हैं। यह मृत्युभय प्रवाह से-अनादि काल से निरन्तर चला आ रहा है और यह भय प्राणिमात्र को होता है। चाहे वह भय पशु, पक्षी, कीट-पतंगादि को होता हो, चाहे साधारण-से-साधारण मनुष्य को होता हो। मनुष्येतर प्राणियों को मृत्यु का भय होना और साधारण मनुष्यों को भी होना कोई विशेष आश्चर्य की बात नहीं है, परन्तु जो पण्डित-विद्वान् हैं, शास्त्रों को आदि से अन्त तक जानने वाले हैं, उन्हें बोध रहता है कि जो जन्म लेता है, वह मरता (शरीर त्याग करता) भी है। इतना सब कुछ जानने के पश्चात् भी अज्ञानियों के समान मृत्यु से घबराते-डरते हैं। इसी डर-भय को महर्षि ने **अभिनिवेश** नाम से कथन किया है।

प्रस्तुत सूत्र की व्याख्या करते हुए महर्षि वेदव्यास लिखते हैं-

सर्वस्य प्राणिन इयमात्माशीर्नित्या भवति,
मा न भूवं भूयासमिति।

अर्थात् प्रत्येक प्राणि को अपना आत्मा के विषय में अभिलाषा होती है कि 'मैं सदा ऐसा ही बना रहूँ, ऐसा कभी न हो कि मैं न रहूँ।' ऐसी अभिलाषा नित्य होती है अर्थात् जब-जब आत्मा शरीर धारण करता है तब-तब आत्मा को ऐसा ही अनुभव होता है, इसलिए इसे सदा रहने वाली अभिलाषा कहा जाता है। इस कारण मनुष्य मृत्युभय को लेकर सदा सतर्क और सावधान रहता है। मनुष्य में एक स्वभाव है कि वह किसी भी व्यक्ति या वस्तु के प्रति आकर्षण रखता है या विकर्षण (अलगाव) रखता है। यह तब होता है, जब उसने, उस व्यक्ति या वस्तु का पहले अनुभव किया हो। यदि ऐसा नहीं है, अर्थात् पहले अनुभव नहीं किया, परन्तु आकर्षण या विकर्षण हो रहा है, ऐसा कभी सम्भव नहीं हो सकता, इसलिए महर्षि ने कहा है-

न चाननुभूतमरणधर्मकस्यैषा भवत्यात्माशीः।

अर्थात् जिस मनुष्य ने पूर्व जन्म में मृत्यु क्रिया का अनुभव न किया हो, उसकी यह आत्मा-सम्बन्धी अभिलाषा नहीं हो सकती। किसी भी आत्मा ने मरने के कष्ट का अनुभव कभी किया ही न हो, तो भला वह मरने से निरन्तर क्यों डरेगा? इससे यह स्पष्ट होता है कि-

एतया च पूर्वजन्मानुभवः प्रतीयते।

अर्थात् इसी अभिलाषा के कारण से पूर्व जन्म में अनुभव किये मरण दुःख का अनुभव इस वर्तमान जन्म में भी हो रहा है, ऐसी स्पष्ट प्रतीति होती है। वही यह मृत्युभय अपने संस्कारों के रूप में मन में विद्यमान होकर सदा मनुष्य को भयभीत करता रहता है। इस भयभीत करने वाले मृत्युभय को महर्षि ने अभिनिवेश नाम से पाँचवें क्लेश के रूप में प्रस्तुत किया है।

यद्यपि मनुष्य को इस संसार में नाना प्रकार के भय प्राप्त होते रहते हैं, जैसे अन्न न मिलने का भय, वस्त्र न मिलने का भय, घर न मिलने का भय अर्थात् रोटी, कपड़ा और मकान के प्रति सदा भय बना रहता है। यह भय सामान्य रूप से प्रत्येक मनुष्य को होता है, परन्तु कुछ विशेष साधनों के अभाव में विशेष मनुष्यों को ही भय सताता रहता है, ऐसा भय सबको नहीं होता। चाहे जड़ वस्तुओं से सम्बन्धित भय हो या चेतन वस्तुओं से सम्बन्धित भय हो, यह अलग-अलग व्यक्तियों की अलग-अलग योग्यताओं के कारण हो सकता है, परन्तु अभिनिवेश नामक भय, ऐसा भय है जिससे कोई भी मनुष्य अछूता नहीं रह सकता। न केवल मनुष्य, मनुष्येतर समस्त प्राणियों को भी यह भय आतंकित करता है, इसलिए महर्षि वेदव्यास कहते हैं-

स चायमभिनिवेशः क्लेशः स्वरसवाही कृमेरपि

thearyasamaj.org

जातमात्रस्य प्रत्यक्षनुमानागमैरसम्भावितो मरणत्रास उच्छेददृष्ट्यात्मकः पूर्वजन्मानुभूतं मरणदुःखमनुमापयति।

अर्थात् और वह यह अपने संस्कारों के रूप में वर्तमान मरणभय रूप अभिनिवेश नामक क्लेश अभी-अभी उत्पन्नमात्र कृमि रूप क्षुद्रजन्तुओं को भी, जिनको इस वर्तमान जन्म में प्रत्यक्ष, अनुमान तथा शब्द प्रमाण से जानकारी नहीं मिली है, ऐसा उच्छेद-विनाश रूप मृत्यु का भय पूर्व जन्मों में अनुभव किये मरण दुःख का अनुमान कराता है।

यहाँ पर महर्षि वेदव्यास ने क्षुद्रजन्तु-कृमि का उदाहरण रूप में ग्रहण किया है, जिसने अभी-अभी जन्म लिया है, जिसे मृत्यु के विषय में किसी भी प्रकार की जानकारी नहीं है और न ही उसने किसी और को मरते हुए प्रत्यक्ष किया है, जिसको मृत्यु क्या होती है? इसका कोई पता तक नहीं है। ऐसी स्थिति में उसे अनुमान भी नहीं हो सकता, अर्थात् मृत्यु का प्रत्यक्ष न तो स्वयं को हुआ है और न ही अन्यों को मरते हुए प्रत्यक्ष किया है। बिना प्रत्यक्ष के उसे अनुमान भी नहीं होगा। जब कोई मनुष्य या अन्य प्राणि उस कृमि को मारने की चेष्टा करते हैं, तब वह कृमि पूर्व प्रत्यक्ष के अनुसार अनुमान नहीं कर सकता, क्योंकि उसे इस जन्म में कभी मृत्यु का प्रत्यक्ष ही नहीं हुआ है। न प्रत्यक्ष हुआ है और न ही अनुमान हो सकता है। कोई यह न समझे कि शब्द प्रमाण से पता लग जायेगा? ऐसा भी नहीं हो सकता, क्योंकि शब्दप्रमाण का प्रयोग जिस प्रकार से मनुष्यों में होता है, उस प्रकार अन्यों (कृमि आदि योनियों) में नहीं होता है। मनुष्यों को उपदेशादि के द्वारा जानकारी दी जाती है, इसलिए मनुष्य शब्द प्रमाण का प्रयोग करते हैं, परन्तु कृमि आदि ऐसा नहीं कर पाते हैं। मनुष्यों जैसी विकसित बुद्धि अन्य योनियों में नहीं होती है। इस कारण महर्षि वेदव्यास ने तीनों (प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द) प्रमाणों से असम्भावित बताया है, फिर भी कृमि को मृत्यु का भय हो रहा होता है और वह भय अनायास पूर्व जन्म को सिद्ध करता है।

महर्षि वेदव्यास के इस उपरोक्त मन्तव्य से यह बात सिद्ध होती है कि पूर्व जन्म होता है और अगला जन्म भी होता है। जो कोई यह कहता है कि पूर्व जन्म को किसने देखा या अगले जन्म को किसने देखा? ये बातें निराधार हैं अर्थात् बिना प्रमाण के ऐसी-ऐसी बातें किया करते हैं, जिनके पीछे किसी भी प्रकार का आधार नहीं होता। यह अभिनिवेश नामक क्लेश निराधार वाली बातों को पूर्ण विराम दे देता है। अभिनिवेश नामक क्लेश से पूर्व जन्म, अगला जन्म, आत्म-नित्यत्व आदि अनेक सिद्धान्त खुलते हैं- स्पष्ट होते हैं और इनके माध्यम से आत्मा को यथार्थ रूप से समझने का यत्न किया जाता है। ऐसा जो करता है, वह तत्त्वज्ञानी बन जाता है। तत्त्वज्ञानी बन कर वह जन्म-मरण रूपी शृंखला को तोड़ देता है। इस सम्बन्ध में **महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती** लिखते हैं- '.........इस क्लेश की निवृत्ति उस समय होगी कि जब जीव, परमेश्वर और प्रकृति अर्थात् जगत् के कारण को वह नित्य और कार्यद्रव्य के संयोग को अनित्य जान लेगा। इन क्लेशों की शान्ति से जीव को मोक्ष सुख की प्राप्ति होती है।' (ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका मुक्तिविषय) यहाँ पर महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अभिनिवेश नामक क्लेश की व्याख्या करते हुए पूर्व जन्म और अगले जन्म की सिद्धि से आत्म-नित्यत्व की सिद्धि की है, जिससे योगाभ्यासी अपने आप (आत्मा) को जाने व समझे और अपने प्रयोजन को पूर्ण करने के लिए क्रियायोग को दृढ़ करे, जिससे तत्त्वज्ञान हो सके और प्रयोजन को पूर्ण कर सके।

महर्षि वेदव्यास अभिनिवेश की व्यापकता को बताते हुए कहते हैं-

यथा चायमत्यन्तमूढेषु दृश्यते क्लेशस्तथा
विदुषोऽपि विज्ञातपूर्वपरान्तस्य रूढः।

अर्थात् यह अभिनिवेश नामक क्लेश अत्यन्त मूढ़ यानि सब प्रकार के विज्ञान से रहित महामूर्ख, जिसे सामान्य जानकारी भी नहीं है, जो घनघोर जंगलों में रह रहा हो, ऐसे व्यक्ति को सताता रहता है- इसमें कोई विशेष बात नहीं है, परन्तु जो विद्वान् है, जिसने सब शास्त्रों का अध्ययन किया है, जिसे जन्म और मृत्यु का बोध है, जिसे बन्धन का कारण और मोक्ष का भी कारण पता है, इतना ही नहीं उसे यह भी पता है कि जो जन्म लेता है, उसकी मृत्यु अवश्य होगी और जिसकी मृत्यु होगी, उसका पुनः जन्म भी होगा, इससे आत्मा का नाश नहीं होता, आत्मा तो नित्य है- इत्यादि सभी विषयों का यथावत् बोध रखता है, फिर भी मृत्यु से डरता रहता है। इस प्रकार साधारण से साधारण मनुष्य, पशु-पक्षी आदि और विद्वान् सभी मृत्यु से डरते हैं। मृत्यु का आतंक प्राणिमात्र को है, इसका निराकरण नहीं हो सकता। इस सम्बन्ध में महर्षि वेदव्यास कहते हैं-

'कस्मात्? समाना हि तयोः
कुशलाकुशलयोर्मरणदुःखानुभवादियं वासनेति।'

अर्थात् प्राणिमात्र को एक समान मृत्यु का भय क्यों

thearyasamaj.org

[illegible] यह है कि पूर्व जन्म में कुशल=विद्वान् और अकुशल=साधारण अनपढ़ मनुष्य, दोनों ने एक समान मृत्यु का दु:ख भोगा है। उस दु:खानुभव की वासना (संस्कार) दोनों में एक समान है, इसलिए वर्तमान जन्म में भी दोनों को पुन: मृत्यु का भय हो रहा है। इससे पूर्व जन्म की सिद्धि होती है।

संसार में कोई भी व्यक्ति इस बात का खण्डन नहीं कर सकता कि पूर्व जन्म नहीं होता या अगला जन्म नहीं होता। इतना ही नहीं, आत्मा नहीं मरता है-आत्मा का नाश नहीं होता है, यह जीवन ही अन्तिम जीवन नहीं है- इत्यादि अनेक विषय तर्क और प्रमाणों से सही सिद्ध होते हैं।

- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

पृष्ठ संख्या ४२ का शेष भाग.....

कॉलेज के पूर्व प्रो. डॉ. कृष्णपालसिंह ने २६ फरवरी २०१५ से सप्ताह भर प्रवचन किए। दि. २१ से २९ मार्च तक मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के जीवन एवं कृतित्त्व पर वाल्मीकि रामायण एवं तुलसीदास के रामचरित मानस में तादात्म्य रखते हुए, आर्यजगत् के ख्याति प्राप्त प्रवक्ता डॉ. रामपाल विद्या भास्कर ने अपने विचार रखे।

६. सम्मान- आर्य पुरोहित सभा मुम्बई का ११वाँ वार्षिकोत्सव एवं दैनिक अग्निहोत्री (याज्ञिक) परिवार सम्मान समारोह दि. ५ अप्रैल २०१५ को बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस भव्य कार्यक्रम का शुभारम्भ बृहद यज्ञ से हुआ, अनेक आर्य समाजों से प्रतिदिन यज्ञ करने वाले याज्ञिक आर्य नर-नारियों ने २२ हवन कुण्डों पर उपस्थित होकर श्रद्धापूर्वक विशेष हवन सामग्री व शुद्ध गोघृत से आहुतियाँ देते हुए रोग निवारण एवं सुख शान्ति, समृद्धि एवं समुन्नति के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की।

७. शिविर सम्पन्न- महाराष्ट्र राज्य के (जि. अमरावती, तह. अचलपुर) पथ्रोट नगर के आर्यसमाज मन्दिर में श्रीमती डॉ. उषा शर्मा जी (गुड़गाँव, हरि.) के निर्देशन व ब्रह्मत्व में, पं. सत्यवीर शास्त्री (सभा प्रधान), आचार्य कर्मवीर जी (ऋषि उद्यान, अजमेर) आचार्य सचिन कुमार शास्त्री एवं आचार्य सागर कुमार शास्त्री के सहयोग व आशीर्वाद से दस दिवसीय चतुर्वेद शतकम् पारायण यज्ञ तथा रामायण प्रवचन निर्विघ्न सम्पन्न हुए। शिविर के संयोजक प्रचार मन्त्री श्रीमान् शरद राव कोसरे तथा आर्यसमाज मन्दिर के प्रधान श्री विनायकराव हरने व अनेक महिलाओं एवं पुरुषों का भरपूर सहयोग रहा। श्री कर्मवीर जी (ऋषि उद्यान) के निर्देशन में तीन दिवसीय आवासीय चारित्र्य निर्माण शिविर भी सम्पन्न हुआ।

भूकम्प पीड़ितों की सहायता के लिए आगे आएँ

केसरगंज, अजमेर स्थित परोपकारिणी सभा नेपाल-भारत में भूकम्प पीड़ितों की सहायता के लिए अपना राहत दल भेज रही है। जैसा कि विदित है, पिछले दिनों आए भूकम्प से वहाँ अपार जन-धन की हानि हुई है और विपत्तियों में फँसे लोगों को तुरन्त सहायता की आवश्यकता है।

सभा के कार्यकारी प्रधान डॉ. धर्मवीर जी ने बताया कि सभा के तीन उद्देश्यों में से एक दीन-दु:खी मानव की सेवा करना है, इन्हीं उद्देश्यों को लेकर आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने १८८२ ई. में सभा की स्थापना की थी, अत: दीन-दुखियों की सेवा के लिए संस्था ऐसी प्राकृतिक आपदाओं में अपने पूरे सामर्थ्य से राहत कार्य करती रही है।

अपने पिछले राहत कार्य में सभा ने जून २०१३ की बाढ़ में नष्ट हुए उत्तराखण्ड में अपने ७ कार्यकर्ताओं (गुरुकुल के ब्रह्मचारियों) का दल भेजा था, जिसने रुद्रप्रयाग और गुप्तकाशी के आसपास २५-३० किमी. के दायरे में एक महीने तक पैदल घूम-घूमकर लोगों तक लाखों रुपयों की सहायता पहुँचाई थी। इसी प्रकार ओड़िशा, गुजरात आदि की प्राकृतिक आपदाओं में भी सभा यथासामर्थ्य सहायता पहुँचाती रही है।

सभा अब नेपाल में आए भूकम्प में अपना राहत दल भेजने जा रही है, ताकि पीड़ित लोगों तक शीघ्र सहायता पहुँचाई जा सके। सभा का आय का मुख्य स्रोत आप लोगों से प्राप्त होने वाला दान ही है, अत: सभा का आप सभी दानी महानुभावों से निवेदन है कि अधिक-से-अधिक राशि इस निमित्त दान दें, ताकि भूकम्प पीड़ितों की अधिक-से-अधिक सहायता-सेवा की जा सके। सभा को दिया गया दान आयकर की धारा ८० जी के तहत करमुक्त है। आप अपना सहयोग कार्यालयीन समय में सभा के केसरगंज स्थित कार्यालय में अथवा दिन में किसी भी समय ऋषि उद्यान में जमा करवा सकते हैं।

thearyasamaj.org

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

योग–साधना शिविर (प्राथमिक व द्वितीय स्तर)

दिनांक : १४ से २१ जून, २०१५

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान-विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों-बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग-साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक-दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।
२. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।
३. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य-सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।
४. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।
५. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि-उद्यान परिसर में ही की जायेगी।
६. बाह्य-वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे समाचार-पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखना, पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।
७. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा सर्दी, खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।
८. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।
९. किसी भी मादक द्रव्य, चाय-कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।
१०. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन-सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।
११. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ-मन्त्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता-बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्-पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क १००० से २००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है। ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने-ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ अन्यथा यहाँ भी क्रय किया जा सकता है। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ

thearyasamaj.org
में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४
email:psabhaa@gmail.com

: मार्ग :

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

-संयोजक

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उस पर '**मन्त्री परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावरहाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।
IFSC - IBKL0000091

२. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - 10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।
IFSC - SBIN0007959

मनुष्यों को उचित है कि परमेश्वर में ही मन बुद्धि को युक्त कर विद्वानों के सङ्ग से विद्या को पा सुखी हो अन्य मनुष्यों को भी इसी प्रकार आनन्दित करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.१४

जैसे विद्वान् लोग ईश्वर की सृष्टि में विद्या से पदार्थों की परीक्षा करके कार्य्यों में उपयोग कर सुखों को प्राप्त करते हैं वैसे ही सब मनुष्यों को इस यज्ञ का अनुष्ठान कर सब सुखों को पहुँचाना चाहिये।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.२२

hearyasamaj.org

परोपकारिणी सभा एवं आर्यवीर दल राजस्थान के संयुक्त तत्त्वावधान में

प्रान्तीय आर्यवीर दल शिविर

का भव्य आयोजन

दिनांक : १७ मई २०१५ रविवार से २४ मई २०१५ रविवार तक

स्थान : ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर (राज.)

सम्पर्क सूत्र : ०९००१४३४४८४

यू-ट्यूब पर वीडियो प्रवचन उपलब्ध

वेद एवं आर्ष साहित्य में रुचि रखने वाले आर्यजगत् एवं धार्मिक जनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब यू-ट्यूब पर अनेक वैदिक आर्य विद्वानों के सैंकड़ों नये-नये प्रवचन उपलब्ध हैं। विश्व में कहीं पर भी इन्टरनेट से जुड़ कर ये प्रवचन निःशुल्क सुने-देखे तथा डाउनलोड किये जा सकते हैं। आप जहाँ भी हैं, यदि आपको वैदिक आर्ष ज्ञान की पिपासा है, वेद एवं आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय के साथ आप इन पर विद्वानों के प्रवचन भी सुनना चाहते हैं, तो इन्टरनेट से जुड़ कर सरलता से सुन सकते हैं।

इसके लिए you tube पर जाकर playlist of paropkarini sabha लिख कर सर्च करें, तो आपको अनेक प्लेलिस्ट मिलेंगी, यथा- वेद प्रवचन, योग दर्शन, ईशोपनिषद् आदि। इनमें इच्छानुसार जाकर लाभ उठाया जा सकता है। आप अपने परिचितों को यह सूचना देकर उन्हें भी लाभ उठाने को प्रेरित कर सकते हैं। भविष्य में अन्य भी नये-नये प्रवचन इस सूची में उपलब्ध कराये जाते रहेंगे।

अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगांठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्म तिथि/वैवाहिक वर्षगांठ आदि व दूरभाष संख्या सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नगद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

thearyasamaj.org

कुछ तड़प-कुछ झड़प

– राजेन्द्र जिज्ञासु

सत्यार्थप्रकाश की वैचारिक क्रान्ति:- भले ही ईसाई मत, इस्लाम व अन्य-अन्य वेद विरोधी मतों की सर्विस के लिए कुछ व्यक्ति आर्यसमाज का विध्वंस करने के लिए सब पापड़ बेल रहे हैं, परन्तु महर्षि दयानन्द का अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश निरन्तर अन्धकार का निवारण करके ज्ञान उजाला देकर वैचारिक क्रान्ति कर रहा है। पुराने आर्य विद्वान् अपने अनुकूल व प्रतिकूल प्रत्येक लेख व कथन पर ध्यान देते थे। अब वर्ष में एक बार जलसा करवाकर संस्थाओं की तृप्ति हो जाती है। ऋषि जीवन व ऋषि मिशन विषयक खोज में उनकी रुचि ही नहीं।

लीजिये संक्षेप में वैचारिक क्रान्ति के कुछ उदाहरण यहाँ देते हैं:-

पहले बाइबिल का आरम्भ इन शब्दों से होता था:-

1. "In the beginning God created the **heaven** and the earth. And the earth was **waste and void**, and the darkness was upon the face of the deep and the spirit of god **moved** upon the face of the waters."

अब ऋषि की समीक्षा का चमत्कार देखिये। अब ये दो आयतें इस प्रकार से छपने लगी हैं:-

"In the beginning God created the **heavens** and the earth. Now the earth was **formless and empty,** darkness was over the surface of the deep, and the **spirit of god** was hovering over the waters."

प्रबुद्ध विद्वान् इस परिवर्तन पर गम्भीरता से विचार करें। हम आज इस परिवर्तन की समीक्षा नहीं स्वागत ही करते हैं। इस अदल-बदल से ऋषि की समीक्षा सार्थक ही हो रही है, क्या हुआ जो (पोल) से आपका पिण्ड ऋषि ने छुड़ा दिया। ऋषि का प्रश्न तो ज्यों का त्यों बना हुआ है।

"And God said, Behold, I have given you every herb yelding seed, which is upon the face of all the earth, and every tree, in which is the fruit of a tree yielding seed**; to you it shall be for meat:** and to every beast of the earth, and to every fowl of the air and to every thing that creepth upon the earth, wherein there is life, I have given **every herb for meat**: and it was so."

पाठकवृन्द! यह बाइबिल की उत्पत्ति की पुस्तक के प्रथम अध्याय की आयत संख्या २९, ३० हैं। सत्यार्थप्रकाश के प्रकाश में हमारे विद्वान् मास्टर आत्माराम आदि इनकी चर्चा शास्त्रार्थों में करते आये हैं। अब ये आयतें अपने नये स्वरूप में ऐसे हैं। इन पर विचार कीजिये:-

Then God said, "I give you every seed-bearing plant on the face of the whole earth and every tree that has fruit with seed in it. **They will be yours for food**. And to all the beasts of the earth and all the birds in the sky and all the creatures that move on the ground-everything that has the breath of life in it- **I give every green plant for food."**

ये दोनों अवतरण बाइबिल के हैं। दोनों का मिलान करके देखिये कि सत्यार्थप्रकाश की वैचारिक क्रान्ति के कितने दूरगामी परिणाम निकले हैं। हम इस नये परिवर्तन, संशोधन की क्या समीक्षा करें? हम हृदय से इस वैचारिक क्रान्ति का स्वागत करते हैं। ऋषि की कृपा से ईसाइयत के माथे से मांस का कलंक धुल गया। मांसाहार का स्थान शाकाहार को दे दिया गया है। मनुष्य का भोजन अन्न, फल और दूध को स्वीकार किया गया है। यह मनुजता की विजय है। यह सत्य की विजय है। यह ईश्वर के नित्य अनादि सिद्धान्तों की विजय है। यह क्रूरता, हिंसा की पराजय है। यह विश्व शान्ति का ईश्वरीय मार्ग है। बाइबिल के इस वैदिक रंग पर सब ईसाई बन्धुओं को हमारी बधाई स्वीकार हो।

श्री विश्वनाथ का भ्रामक लेख:- दिल्ली से छपने वाले मासिक 'ब्रह्मार्पण' में अमर धर्मवीर महाशय राजपाल जी के सुयोग्य पुत्र तथा विख्यात प्रकाशक का एक लेख अमर बलिदानी महाशय राजपाल प्रकाशित हुआ है। विश्वनाथ जी अब संसार में नहीं हैं। उनके निधन के पश्चात् इस लेख में कई भ्रामक बातें देखकर मुझे उनका निराकरण

hearyasamaj.org

करना पड़ रहा है। यदि इनका प्रतिवाद न किया जाये तो इतिहास प्रदूषित होता जायेगा। तथ्य यह है कि विश्वनाथ जी के पास आर्यसमाज के लिए समय नहीं था। वे कभी आर्यसमाज के सत्संगों में नहीं देखे गये। डी.ए.वी. में एक पद उनके पास था, अत: वहाँ कुछ समय देते थे।

महाशय राजपाल पर मेरा लिखा ग्रन्थ आपने प्रकाशन पूर्व देखना चाहा। पाण्डुलिपि पढ़कर उसे प्रकाशित करने की उत्कट इच्छा प्रकट की। पुस्तक का एक भी प्रूफ मुझे नहीं दिखाया गया। उसमें मनमानी अशुद्धियाँ भर दी गईं, जिनका मैंने कई बार प्रतिवाद किया। उनको ग्रन्थ देना मेरी भावुकता व भूल थी। वैसे वह मेरी शैली, श्रम व खोज के बहुत प्रशंसक थे।

इस लेख में लिखा है कि स्वामी श्रद्धानन्द जी ने महाशय जी को सहायक सम्पादक के रूप में सद्धर्म प्रचारक में नियुक्त किया। यह तथ्य व सत्य नहीं। महाशय जी को व्यवस्था के लिए, प्रबन्ध में सहयोग के लिये नियुक्त किया गया था। वैसे वे कभी-कभी उसमें कुछ लिखते भी रहते थे। मैंने उनके ऐसे सब लेख पढ़े हैं। ये कुल मिलाकर दस भी नहीं बनते।

महाशय राजपाल 'प्रकाश' के सहायक सम्पादक तो लम्बे समय तक रहे। प्रबन्धक भी वही थे। 'प्रताप' के प्रबन्ध में भी सहयोगी रहे।

पं. गुरुदत्त जी लाहौर डी.ए.वी. कॉलेज में प्रोफैसर नहीं थे। वे राजकीय कॉलेज में विज्ञान के प्राध्यापक थे।

विश्वनाथ जी ने लिखा है कि भाई परमानन्द जी लिखित सभी इतिहास पुस्तकें महाशय राजपाल जी ने प्रकाशित की थीं। यह कथन सत्य नहीं है। वीर वैरागी, गीता के राज (गीता रहस्य), भाई जी की कालेपानी की कहानी आदि कई इतिहास विषयक पुस्तकें लाजपतराय एण्ड संस ने छापी थीं।

महाशय जी का जन्म का नाम घसीटाराम था। आर्यसमाजी बने तो सार्थक नाम राजपाल रख लिया। विश्वनाथ जी ने 'घसीटाराम' पुराना नाम मेरी पुस्तक से ही निकाल दिया। राजपाल नाम तो प्रकाश में आने पर बदला गया। सन् १९०७ के मध्य तक वह जी.आर. अमृतसरी नाम से ही लिखते थे। जी.आर. से घसीटाराम ही अभिप्रेत है। 'मुहक्किक' पत्रिका में भी यही नाम था।

विश्वनाथ जी ने लिखा है कि महाशय जी ने **आर्य युवक समाज** भी संगठित कर रखा था। उस संस्था का नाम **'आर्य मित्र सभा'** था। उसकी चर्चा मैंने स्वामी दर्शनानन्द जी के जीवन चरित्र में भी की है। 'आर्य मित्र सभा' के नाम में गड़बड़ इतिहास-प्रदूषण ही तो है।

विश्वनाथ जी ने मेरे ग्रन्थ में प्रकाश का जन्म सन् १९०५ की बजाय १९०६ कर दिया। यह भी गड़बड़ है। मैंने जो कुछ लिखा, मूल स्रोत सामने रखकर लिखा। 'सरस्वती आश्रम' की अधूरी चर्चा करना भी विश्वनाथ जी की भूल है। यह विश्व प्रसिद्ध पहला संस्थान है, जो किसी पुरुष ने अपनी पत्नी के जीवनकाल में भी स्थापित किया। यह नारी के सम्मान की विश्व इतिहास की पहली घटना है। परोपकारी में इस पर लिखा जा चुका है। सरस्वती महाशय जी की पत्नी का नाम था। इसे देना चाहिये था। दो सौ पुस्तकों के तो नाम आदि मैंने खोज दिये थे और भी अनेक पुस्तकें, यथा- रामस्वरूप लिखित 'जोन ऑफ आर्क' आदि मेरे पास हैं। पाठक इन तथ्यों के इतिहास की रक्षा करें।

राव बहादुरसिंह मसूदा-इतिहास के लुप्त पृष्ठः- महर्षि दयानन्द जी की जीवनी लिखने वाले पुराने विद्वान् लेखकों ने मसूदा राजस्थान के राव बहादुरसिंह जी की अच्छी चर्चा की है, परन्तु उन पर कुछ विशेष खोज करने का उद्यम न तो मसूदा के किसी गवेषक ने किया और न ही राजस्थान के आर्यों ने राव जी की ठोस सेवाओं तथा व्यक्तित्व के अनुरूप ही करणीय पुरुषार्थ किया। वास्तव में ऐसे कार्य धन से ही नहीं होते। इनके लिए पण्डित लेखराम की आग, स्वामी स्वतन्त्रानन्द की ललक और इतिहासकार पं. विष्णुदत्त जैसी लगन चाहिए। हमने राव बहादुरसिंह की विशेष देन तथा आर्यसमाज के इतिहास में उनके स्थान का नये सिरे से मूल्याङ्कन करके ऋषि जीवन तथा 'परोपकारी' पाक्षिक में कुछ नया प्रकाश डाला है।

हमारी खोज अभी जारी है। महर्षि के मिशन के सबसे पहले ब्राह्मणेतर शास्त्रार्थ महारथी राव बहादुरसिंह थे। परोपकारिणी सभा के निर्माण, दयानन्द आश्रम आदि की स्थापना तथा सभा के आरम्भिक काल के उत्सवों के आयोजन में आपने दिल खोलकर दान दिया। आपके दान से परोपकारिणी सभा तथा राजस्थान का आर्यसमाज ही लाभान्वित नहीं हुआ, वरन अन्य-अन्य प्रदेशों के समाजों व संस्थाओं को भी आपने उदारतापूर्वक दान दिया-

१. देशहितैषी मासिक को उस युग में ६५/- रु. दान दिये।

thearyasamaj.org

२. आर्यसमाज मन्दिर अजमेर के लिये ४००/- रु. प्रदान किये।

३. आर्य अनाथालय फीरोजपुर को १५०/- रु. दिये।

४. फर्रुखाबाद की पाठशाला के लिए १००/- रु. दिये।

५. आर्यसमाज शिमला (हिमाचल) के मन्दिर निर्माण के लिए ५०/- रु. दिये।

६. स्वामी आत्मानन्द जी को उस युग में १००/- रु. भेंट किये।

उनके एक और बड़े दान की फिर चर्चा की जायेगी। जब दयानन्द आश्रम की स्थापना के उत्सव पर देशभर से भारी संख्या में आर्यगण पधारे, तब एक समय के भोजन का सब व्यय आपने दिया था।

भगवानों की सूची जारी करो:- राजनेताओं की धार्मिकता व भक्ति भावना देख-देख कर आश्चर्य होता है। लोकसभा के चुनाव के दिनों काशी में गंगा स्नान और गंगा जी की आरती की प्रतियोगिता देखी गई। केजरीवाल भी धर्मात्मा बनकर साथियों सहित गंगा में डुबकियाँ लगाते हुए मोदी को गंगा की आरती में सम्मिलित होने के लिए ललकार रहा था। अजमेर की कबर-यात्रा पर एक-एक करके कई नेता पहुँचे। चुनाव समाप्त होते ही दिग्विजय के गुरु स्वरूपानन्द जी ने साई बाबा भगवान् का विवाद छेड़ दिया। सन्तों का सम्मेलन होने लगा। स्वरूपानन्द जी संघ परिवार विरोधी माने जाते हैं। इन्हें हिन्दू हितों का ध्यान आ गया। हिन्दुओं को जोड़ने व हिन्दुओं की रक्षा के लिए कभी कोई आन्दोलन छेड़ा?

क्या ब्राह्मणेतर कुल में जन्मे किसी व्यक्ति को अपना उत्तराधिकारी बनाने का साहस आप में है? क्या दलित वर्ग में जन्मे किसी भक्त से जल लेकर आचमन कर सकते हैं?

हिन्दुओं के कितने भगवान् हैं? यह उमा जी ने चर्चा छेड़ी है। संघ परिवार को और स्वरूपानन्द जी को हिन्दुओं के भगवानों की अपनी-अपनी सूची जारी करनी चाहिये। यह भी बताना होगा कि भगवान् एक है या अनेक? भगवानों की संख्या निश्चित है या घटती-बढ़ती रहती है। अमरनाथ यात्रा वाले अब लिंग की बजाय 'बर्फानी बाबा' का शोर मचाने लगे हैं। यात्री बम-बम भोले रटते हुए 'ऊपर वाले' की दुहाई देते हैं। क्या भगवान् सर्वत्र नहीं? ऊपर ही है? यह संघ व स्वरूपानन्द जी को स्पष्ट करना चाहिये। अमरनाथ यात्री टी.वी. में बता रहे थे कि ऊपर वाले की कृपा से हमें कुछ नहीं होगा। यदि भगवान् ऊपर ही है तो 'ईशावास्य' यह ऋचा ही मिथ्या हो गई। प्रभु कण-कण में है- यह मान्यता निरर्थक हो गई। हिन्दुओं को हिन्दू साधु, आचार्य, सन्त भ्रमित कर रहे हैं। धर्म रक्षा व धर्म प्रचार कैसे हो? एकता का कोई सूत्र तो हो।

मन्नतें पूरी होती हैं:- साई बाबा विवाद में उमा जी ने यह भी कहा है कि अनेक भक्तों की मन्नतें साई बाबा ने पूरी कीं। मन्नतें पूरी करने वाले देश में सैकड़ों ठिकाने हैं। उमा जी जैसे भक्तों को राम मन्दिर निर्माण, कश्मीर के हिन्दुओं का पुनर्वास, धारा ३७०, निर्धनता निवारण, आतंकवाद से छुटकारे के लिए मन्नत माँग कर देश में सुख चैन का युग लाना चाहिए।

मन्नतों का अन्धविश्वास फैलाकर देश को डुबोया जा रहा है। केदारनाथ, बद्रीनाथ यात्रा की त्रासदी को कौन भूल सकता है? मन्नतें माँगने गये सैकड़ों भक्त जीवित घरों को नहीं लौटे। कई भगवान् बाढ़ में बह गये। इससे क्या सीखा? आँखें फिर भी न खुलीं।

भावुकता से अन्धे होकर:- जामपुर (पश्चिमी पंजाब) में एक आर्य कन्या ने आर्यसमाज के सत्संग में एक कविता सुनाई। उसकी एक पंक्ति थी-

मेरी मिट्टी से बूये वफ़ा आयेगी।

अर्थात् मरने के पश्चात् मेरी कबर से निष्ठा की गन्ध आयेगी। पं. चमूपति जी ने वहीं बोलते हुए कहा, क्या शिक्षा दे रहे हो? क्या मेरी यह पुत्री मुसलमान के रूप में मरना चाहती है? चिता की, दाहकर्म की बजाय कबर की बात जो कर रही है। बोलते और लिखते समय अन्धविश्वास तथा भ्रामक विचार फैलाने से बचने के लिए सद्ग्रन्थों के आधार पर ही कुछ लिखना-बोलना चाहिए।

आर्यसमाज की हानि:- संघ का गुरु दक्षिणा उत्सव था। संघ वाले स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के पास अपने कार्यक्रम की अध्यक्षता करने का प्रस्ताव लेकर आये। लोकैषणा से कोसों दूर महाराज ने यह कहकर उनकी विनती ठुकरा दी कि इसमें आर्यसमाज की हानि है।

उन्होंने पूछा, 'क्या हानि है?'

स्वामी जी ने कहा, 'मेरी अध्यक्षता में आप जड़ पूजा करेंगे। झण्डे को गुरु मानकर दक्षिणा चढ़ायेंगे, इससे आर्यसमाज में क्या सन्देश जायेगा?'

आर्यसमाज अपनी मर्यादा, अपने इतिहास को भूलकर योगेश्वर नामधारी थोथेश्वरों को अपना पथ प्रदर्शक मानकर

thearyasamaj.org

भटक रहा है। एक योग गुरु ने मिर्जापुर में मजार पर चादर चढ़ाई। कोई गंगा की आरती उतार रहा है तो कोई म.प्र. जाकर मूर्ति पर जल चढ़ा रहा है।

ऋषि ने लिखा है, उसी की उपासना करनी योग्य है। यही वेदादेश है।

इतिहास की परतों के नीचे से:- स्वामी श्रद्धानन्द जी आदि महात्माओं ने लिखा है कि ऋषि-जीवन की खोज में जब पं. लेखराम जोधपुर गये तो सर प्रतापसिंह के गुप्तचर छाया के सदृश उनका पीछा करते रहे, तथापि पण्डित जी ऋषि जीवन की पर्याप्त सामग्री वहाँ से लेकर आये।

जेठमल जी सोढ़ा आदि का कथन है कि कर्नल प्रतापसिंह आदि तथाकथित भक्तों ने जोधपुर से ऋषि के प्रचार के समाचार ही बाहर न निकलने दिये। विष दिये जाने के पश्चात् के समाचार तो बाहर क्या आने थे?

हाँ! वहाँ से ऋषि द्वारा लिखे गये पत्र तो श्री समर्थदान आदि को मिलते रहे। इतिहास की परतों से नीचे दबी पड़ी नई सामग्री अभी-अभी मेरे सामने आई है। उस समय की एक पत्रिका में शाहपुरा में प्रचार के समाचार तो मिलते हैं, शाहपुरा से आगे जोधपुर को प्रस्थान करने के पश्चात् का एक भी समाचार उसमें नहीं है। इस पर आज क्या टिप्पणी करें? पाठक कुछ प्रतीक्षा करें।

दो वर्ष तक वह दीखे ही नहीं:- आबू पर्वत से ऋषि को विदा करके जोधपुर के 'भक्त प्रशंसक' कर्नल प्रतापसिंह न तो महाराज के दाहकर्म में दीखे, न दयानन्द आश्रम आदि के कार्यक्रमों में दिखाई दिये और न ही जोधपुर का कोई उनका नौकर-चाकर ही कभी किसी कार्यक्रम में आया। दो वर्ष तक अर्थात् सितम्बर सन् १८८५ तक की फाईल खँगाल ली है, अंग्रेजों की कठपुतली या गोरों के भक्त प्रशंसक का उस पत्रिका के अंकों में कहीं नाम तक नहीं, फिर एक नई योजना बनाकर जोधपुर के कर्नल प्रतापसिंह आर्यसमाज में हाथ पैर मारने लगे। प्रतापसिंह के नाम लेवा भक्तों ने आर्यसमाज में जो इतिहास प्रदूषण किया, अब उसकी शव परीक्षा भली प्रकार से होगी। एक्स-रे रिपोर्ट आने में अब देर नहीं। प्रमाणों के ढेर लगा दिये जायेंगे।

-वेद सदन, अबोहर, पंजाब

वह बिछोना वही ओढ़ना है-

तर्ज-मनिहारी का वेष बनाया

- पं. संजीव आर्य

आओ साथी बनाएँ भगवान को।
वही दूर करेगा अज्ञान को।।
कोई उसके समान नहीं है
और उससे महान नहीं है
सुख देता वो हर इंसान को।।
वह बिछोना वही ओढ़ना है
उसका आँचल नहीं छोड़ना है
ध्यान सबका है करुणा निधान को।।
दूर मंजिल कठिन रास्ते हैं
कोई साथी हो सब चाहते हैं
चुनें उससे महाबलवान को।।
सत्य श्री से सुसज्जित करेगा
सारे जग में प्रतिष्ठित करेगा
बस करते रहें गुणगान को।।
रूप ईश्वर के हम गीत गाए
दुर्व्यसन दुःख दुर्गुण मिटाएँ
तभी पाएँगे सुख की खान को।।

- गुधनीं, बदायुँ, उ.प्र.

जो खोटे काम करने वाला पुरुष अनेक प्रकार से अपने बल को उन्नत कर सबको दुःख देना चाहे, उसको राजा सब प्रकार से दण्ड दे। तो भी वह अपनी अत्यन्त खोटाइयों को न छोड़े तो उसको मार डाले अथवा नगर से इसको दूर निकाल बन्द रखे।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४४

जिस यज्ञ से सब सुख होते हैं उसका अनुष्ठान सब मनुष्यों को क्यों न करना चाहिये।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.६०

thearyasamaj.org

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में पिछले लगभग एक वर्ष से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ निःशुल्क दी जाती हैं। ऋषि उद्यान में रह रहे डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

१. बैंक का नाम- **भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**10158172715**

IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम-**आई.डी.बी.आइ**, पावर हाऊस के सामने,

जयपुर रोड़, अजमेर।

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**091104000057530**

IFSC-IBKL0000091

email : psabhaa@gmail.com

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

आस्था भजन (चैनल) पर आर्य विद्वानों के प्रवचन

स्वामी रामदेव जी जन-जन के कल्याण को ध्यान में रखते हुए वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए 'आस्था-भजन' चैनल पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे तक दो घण्टे के बीच वैदिक विद्वानों के प्रवचनों को प्रसारित करवा रहे हैं।

इस कार्य में परोपकारिणी सभा द्वारा भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। परोपकारिणी सभा द्वारा प्रवचनों की आपूर्ति के लिए ऋषि उद्यान में रिकॉर्डिंग-यूनिट चल रही है और लगातार नित नये प्रवचनों की रिकॉर्डिंग की जा रही है। परोपकारिणी सभा ये प्रवचन आस्था-भजन (चैनल) को प्रदान कर रही है।

इन दिनों 'आस्था-भजन' (चैनल) पर प्रतिदिन सायं ७ से ७.२० बजे तक **आचार्य धर्मवीर** के वेद-प्रवचन, ७.३० से ७.५० तक **स्वामी विष्वङ्** के योगदर्शन प्रवचन, ८.३० से ८.५० तक **आचार्य सत्यजित्** के प्रवचन प्रसारित हो रहे हैं। इसी प्रकार आगे भी 'आस्था-भजन' पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे के बीच अन्य विद्वानों के व अन्य विषयों पर प्रवचन प्रसारित होते रहेंगे।

धर्मप्रेमी जन इन प्रवचनों का अधिकाधिक लाभ उठाएँ और अन्यों को भी अधिकाधिक सूचित करें।

'आस्था-भजन' (चैनल) डिश-टी.वी. और डी.टी.एच. पर उपलब्ध है, किन्तु टाटा-स्काई, वीडियोकोन, बिग-टी.वी. आदि पर नहीं आ रहा है। जिनके पास ये नहीं आ रहा है, वे अपने प्रसारक (सर्विस प्रोवाइडर) को बार-बार कह कर प्रेरित करते रहें, जिससे कि ये भी आस्था भजन को प्रसारित करने लगें। ऐसा करके वैदिक-धर्म के प्रचार-प्रसार में आप भी सहयोग प्रदान कर सकते हैं। जो केबल से देखते हैं, वे भी अपने केबल ऑपरेटर को कह कर आस्था भजन आरम्भ करवा सकते हैं।

thearyasamaj.org

वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत

वेदभाष्य, वेदभाषाभाष्य, मूलवेद, वेदांगप्रकाश और वैदिक साहित्य

पिछले अंक का शेष भाग.......

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
८८.	सौवर	५.००
८९.	पारिभाषिक	२०.००
९०.	धातुपाठ	
९१.	गणपाठ	२०.००
९२.	उणादिकोष	
९३.	निघण्टु	१५.००
९४.	संस्कृतवाक्यप्रबोध	
९५.	व्यवहारभानु:	२०.००
९६.	निरुक्त (मूल)	८०.००
९७.	अष्टाध्यायी (मूल)	२०.००
९८.	अष्टाध्यायीभाष्य प्रथम भाग सजिल्द	१२०.००
९९.	अष्टाध्यायी भाष्य द्वितीय भाग सजिल्द	१००.००
१००.	अष्टाध्यायी भाष्य तृतीय भाग सजिल्द	१३०.००

डॉ. भवानीलाल भारतीय

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
१०१.	महर्षि दयानन्द– आत्मकथा	
१०२.	उपदेश मंजरी (पूना प्रवचन)	
१०३.	परोपकारिणी सभा का इतिहास	
१०४.	आर्यसमाज के पत्र और पत्रकार	१०.००
१०५.	आर्य नरेश राजाधिराज सर नाहरसिंह वर्मा	८.००
१०६.	दयानन्द–सूक्ति–मुक्तावली	१५.००
१०७.	देशभक्त कुं.चाँदकरण शारदा	५.००
१०८.	दयानन्द वचनामृत	३.००
१०९.	आर्यसमाज के शास्त्रार्थ महारथी	१०.००

वेदगोष्ठी– सम्पादक डॉ. धर्मवीर

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
११०.	ऋषि दयानन्द की वेदभाष्य शैली	२०.००
१११.	वेद और कर्मकाण्डीय विनियोग	३१.००
११२.	अथर्ववेद: समस्याएं और समाधान	३५.००
११३.	वेद और विदेशी विद्वान् – कृतित्व और दृष्टिभेद	३५.००
११४.	वेदों के आख्यान (प्रथम भाग)	३५.००
११५.	वेदों के दार्शनिक विचार	४०.००
११६.	सोम का वैदिक स्वरुप	५०.००
११७.	पर्यावरण का वैदिक स्वरुप	
११८.	वेद और समाज	
११९.	वेद और राष्ट्र	
१२०.	वेद और विज्ञान	
१२१.	वेद और ज्योतिष	८०.००
१२२.	वेदों में पदार्थ विद्या (विशेषांक–१)	५०.००
१२३.	वेदों में पदार्थ विद्या (विशेषांक–२)	५०.००
१२४.	वेद और निरुक्त	१००.००
१२५.	वेद और इतिहास	१००.००
१२६.	वेद में कृषि व वनस्पति विज्ञान	१००.००
१२७.	वेद और शिल्प	
१२८.	वेदों में अध्यात्म	
१२९.	वेदों में राजनैतिक विचार	१००.००
१३०.	वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है	
१३१.	वैदिक समाज विज्ञान	
१३२.	सत्यार्थ प्रकाश ७वाँ समुल्लास और वेद	
१३३.	सत्यार्थ प्रकाश ८वाँ समुल्लास और वेद	

प्रो. धर्मवीर

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
१३४.	आर्यसमाज और शोध	१५.००
१३५.	महर्षि दयानन्द सरस्वती के पत्र	

thearyasamaj.org

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य

स्वामी विष्वङ् परिव्राजक

१३६.	ध्यान योग एवं रोग निवारण	१५०.००
१३७.	योग	५०.००
१३८.	अष्टाङ्ग योग	२०.००
१३९.	समाधि	१००.००

स्वामी अभयानन्द सरस्वती

१४०.	प्राणायाम चिकित्सा	

डॉ. सत्यदेव आर्य

१४१.	वैदिक सन्ध्या मीमांसा	२५.००
१४२.	ईश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासना मन्त्रों का विवेचन	२५.००
१४३.	तन्मेमनःशिवसंकल्पमस्तु का वैज्ञानिक विवेचन	२५.००

विरजानन्द दैवकरणि

१४४.	प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत	८.००
१४५.	महाभारत युद्ध कब हुआ एवं अन्य रचनाएँ	५.००

वैद्य पंडित ब्रह्मानन्द त्रिपाठी

१४६.	बूंदी शास्त्रार्थ	५.००
१४७.	वैदिक सूक्ति–सुमन	२५.००

वैदिक साहित्य – विविध ग्रन्थ

१४८.	दयानन्द ग्रन्थमाला तीन खंड का १ सेट	५५०.००
१४९.	आर्य समाज की मान्यताएं	२०.००
१५०.	मानव निर्माण के स्वर्ण सूत्र	१५.००
१५१.	अथर्ववेदीय पञ्चपटलिका (सजिल्द)	२५.००
१५२.	अथर्ववेदीय पञ्चपटलिका अजिल्द	१५.००
१५३.	ऋग्वेद का नमूना भाष्य (१मंत्र)	४.००
१५४.	ईशादिदशोपनिषद् (मूल)	१०.००
१५५.	वैदिक कोषः (निघण्टु मणिमाला)	२५.००
१५६.	सरस्वती की खोज एवं महाभारत युद्धकाल	१०.००
१५७.	दयानन्द दिव्य दर्शन	१२.००
१५८.	वृक्षों में जीवात्मा	१०.००
१५९.	महर्षि दयानन्द जीवन और सन्देश	३.००
१६०.	महर्षि महिमा	२.००
१६१.	स्वामी दयानन्द चरितम्	१०.००
१६२.	ब्रह्माकुमारी मत खण्डन	८.००
१६३.	निरुक्तकार का ऐतिहासिक पक्ष	५.००
१६४.	मांसाहार– वैदिक धर्म एवं विज्ञान	१२.००
१६५.	नेपाली सत्यार्थ प्रकाश	२००.००
१६६.	परोपकारी विशेषांक	२५.००
१६७.	महर्षि दयानन्द के चित्र (एक प्रति)	५०.००
१६८.	संगठन सूक्त	२.००
१६९.	३१ दिवसीय टेबल कलेण्डर	१००.००
१७०.	प्यारा ऋषि	२५.००
१७१.	नककटा चोर	३०.००
१७२.	महर्षि दयानन्द और उनके अनुयायी	३५.००
१७३.	स्वामी दयानन्द सरस्वती और उनके क्रान्तिकारी शिष्य	३५.००
१७४.	भगवान् को क्यों मानें ?	२५.००
१७५.	महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय	३०.००
१७६.	आर्यसमाज के संस्थापक, महान समाज सुधारक–महर्षि दयानन्द सरस्वती	२५.००
१७७.	शेख चिल्ली और लाल बुझक्कड़	२५.००
१७८.	नैति मंजूषा	९५०.००
१७९.	ऋग्वेदादि संदेश	३०.००
१८०.	त्याग की धरोहर	१००.००

ध्यान योग एवं रोग निवारण (सी.डी.)

(स्वामी विष्वङ् परिव्राजक)

१८१.	अष्टांग योग–१ (सी.डी.)	४०.००
१८२.	अष्टांग योग–२ (सी.डी.)	४०.००
१८३.	आसन (सी.डी.)	४०.००
१८४.	सूक्ष्म व्यायाम (सी.डी.)	४०.००

शेष भाग अगले अंक में.......

thearyasamaj.org

ऊमर काव्य

- ऊमरदान लालस

राजस्थान के गौरव राजस्थानी भाषा के कवि उमरदान जी का अमर काव्य हमें परोपकारिणी सभा के सम्माननीय सदस्य डॉ. खेतलखानी जी की कृपा से प्राप्त हुआ। इस पुस्तक का तीसरा संस्करण १९३० में प्रकाशित हुआ था। इसमें उमरदान जी की अनेक रचनाओं का संग्रह है। इस पुस्तक के पृष्ठ संख्या ६० से ९४ तक 'दयानन्द री दया' नाम से उनकी रचना प्रकाशित है। कवि और काव्य दोनों ही महत्त्वपूर्ण होने से पाठकों के लाभार्थ दयानन्द दर्शन को प्रकाशित कर रहे हैं। यह एक इतिहास का भाग है। पाठक लाभ उठा सकेंगे। - सम्पादक

पिछले अंक का शेष......

[illegible] [illegible][1] कली नृप चटके,
भँवर छैल वेश्या घर भटके।
[illegible] [illegible] सम दार्नों पटके,
क्षत्रिय वंश बांस मिल खटके ॥५८॥

[illegible] [illegible] निज प्रांण बिहावे,
जिण ऊभां निज धर्म न जावे,
[illegible] मिलै नह तो मर जावे।
भूखो सिंघ घास नहिं खावे ॥५९॥

[illegible] [illegible] दयानन्द आयो,[2]
भोम्पी[3] ज्ञान घुमड घण छायो।

१—[illegible] पौधा विशेष। २—जोधपुर नरेश महाराजा श्री [illegible] साहब ने जब स्वलिखित खास रुक्का [illegible] साहब [illegible]पुर को भेजकर स्वामी दयानन्द को [illegible] बुलाया तब उन्हें शाहपुरा (मेवाड़) से ले आने के लिए [illegible] की ओर से इस काव्य के रचयिता कविवर [illegible] और महाकवि चन्द वरदाई के वंशधर [illegible] भेजे गये थे। संवत् १९४० की ज्येष्ठ बदी ८ ([illegible] १८८३ ई०) को स्वामीजी जोधपुर पहुँचे और [illegible] जोधपुर नरेश व राज्य के प्रधान मंत्री महाराज कर्नल [illegible] स्वामीजी की सेवा में उपस्थित हुए। Vide Maharaja Sir Pratap's Autobiography Chapter XXX. Mss. Page 310. ३—ज़मीन।

thearyasamaj.org

सावण हरिकर[1] सुख सरसायो,
भादो अम्मृत झड़ बरसायो ।।६०।।
वहे व्याख्यान वलोबल[2] बाला[3],
नीर निवाण[4] ताल नद नाला ।
पड़े प्रेम घर घर परनाला,
जुगतो जल मेटी त्रिस ज्वाला ।।६१।।
थिर आसोज बेद मग थाटो[5],
लम्पट बालि रावण[6] कुल लाटो[7] ।
अँवँनाँ कर्म जोग पड़ भाटो[8],
वातो में मचगो कललाटो[9] ।।६२।।

१—हरियाली। २—जोर से चलना। ३—नाले। ४—तालाब ५—ठहरा। ६—यह लंका का राजा और ब्राह्मण विश्रवा का पुत्र था। वेदपाठी होते हुए भी रावण का चरित्र महानिन्दित था। इसी से यह भगवान रामचन्द्र द्वारा (विभीषण के सिवाय) सकुटुम्ब मारा गया। ७—दमन किया। ८—पत्थर। ९—हाहाकार। वातो-जोधपुर नरेश के अनुरोध से स्वामी दयानन्द पांच मास तक जोधपुर में हजारों की उपस्थिति में वेदोपदेश करते रहे। देश के मंदभाग्यता से यहाँ की प्रसिद्ध वेश्या नन्हीं भगतन ने अपने एक विशेष कृपापात्र (पापी पुरुष) को लालच देकर उसके द्वारा स्वामीजी के ब्राह्मण रसोईए कलिया या कल्लाजी जगन्नाथ को बहकाया और दूध में विष घोलकर आश्विन बदी १३ शनिवार (२९ सितम्बर) की रात को स्वामीजी को पिला

६

thearyasamaj.org

दयानन्द-दर्शन

लावनी

कित गयो कलानिधि[1] हिय कुमदनि[2] हितकारी।टेर॥
आर्य्यन को स्वामी दयानन्द उपकारी।
गौ ब्राह्मण[3] की गरहा गरहित गोस्वामी,

दिया। इससे यह निर्भीक ऋषि कार्तिक बदी ३० (ता० १० अक्टूबर) की रात को अजमेर नगर में "ओ३म्" शब्द के साथ यह कहते हुए कि "ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो" परमेश्वर की गोद में जा बैठे। इस घटना से भारतवर्ष भर में हाहाकार मच गया। (देखो जोधपुर के वयोवृद्ध रावराजा तेजसिंह राष्ट्रवर लिखित "ऋषि दयानन्द को विष ही दिया गया" नामक लेख 'आर्य मार्त्तण्ड' साप्ताहिक अजमेर भाग २ अंक ५ तारीख ३१ मार्च १९२५ ई० पृष्ठ ५)।

१—चन्द्रमा। २—चाँद को देख कर खिलने वाला कमल। ३—शिला लेखों आदि से ज्ञात होता है कि विक्रम संवत् की बारहवीं शताब्दी के आस-पास तक ब्राह्मणों में न तो जातियाँ थीं और न पंच गौड़ और पंच द्रविड़ के दो मुख्य भेद थे। सब ब्राह्मण "ब्राह्मण" कहलाते थे। सं० १२०० के बाद सम्भवतः मांसाहार और अन्नाहार के कारण यह भेद हुआ और पीछे नगरों, देशों आदि के नाम से ब्राह्मणों की भिन्न-भिन्न जातियाँ हुईं। जैसे नागर ब्राह्मण, गौड़ ब्राह्मण, श्रीमाली ब्राह्मण, पुष्करणे ब्राह्मण, जांगिड़ ब्राह्मण, मैथिल ब्राह्मण, दाहिमा ब्राह्मण इत्यादि। (देखो वयोवृद्ध महामहोपाध्याय रायबहादुर पं० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, अजमेर कृत "मध्यकालीन भारतीय संस्कृति" पृष्ठ ४३-४४ और पूने के रावबहादुर सी० वी० वैद्य कृत "हिस्ट्री आफ मिडिएवल इंडिया" जिल्द ३ पृ० ३७५-८१)

thearyasamaj.org

करुणानिधान करुणामय नित निसकामी[1] ।
इस आर्य्यावर्त्त को रक्षक अन्तर्यामी,
निज आज्ञापालन भेज दियो घन[2] नांमी ॥

दोहा

उदर ब्राह्मणी अवतर्‍यो, पद सन्यासी पाय।
चतुर नराँ चित में चढ्यो, दयानन्द गुरु दाय[3]॥
आनन्द-कन्द[4] जगबन्द चन्द उजियारी॥आर्यन०॥
गुजरात देश में जन्म लियो गुणग्राही,
अवधीच[5] बंश बिच अंशुमान[6] उमगाही[7] ।
आठवें वर्ष उपनयन भयो अवगाही[8] ,
चुप बालकाल मैं बिद्या चित से चाहो ॥

१—त्यागी । २—बहुत । ३—पसन्द । ४—जड़, मूल ५—गुजरात के सोलंकी राजा मूलराज (सं० ९९८–१०५२ वि ने सिद्धपुर में "रुद्रमहालय" नामक बड़ा शिव मन्दिर बनवा और उसकी प्रतिष्ठा के वक्त कुरुक्षेत्र, कन्नौज आदि उत्तरी प्रदे के ब्राह्मणों को बुला कर उनको वहीं रक्खा। वे उत्तर (उदीच से आने के कारण "औदीच्य" कहलाये। गुजरात में बसने बाद इनकी गणना पंचद्रविड़ों में हो गई परन्तु वास्तव मे उत्तर के गौड़ ही हैं। मारवाड़ में जो गोरवाल ब्राह्मण जाति वह औदिच्य ही है। गोल गांव में बसने से वे "गोरवा कहलाने लग गये । ६—सूर्य्य। ७ – हर्षित होना । ८—बी बाद ।

शेष भाग अगले अंक में......

thearyasamaj.org

अग्निहोत्र का आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक महत्त्व

- प्रो. डी.के. माहेश्वरी

पिछले अंक का शेष भाग.....

मीठे पदार्थ

शक्कर, सूखे अंगूर, शहद, छुआरा आदि भी यज्ञ के समय प्रयोग होते हैं। आजकल हवन सामग्री एक कच्चे पाउडर के रूप में बाजार में आसानी से उपलब्ध है जो निम्न पदार्थों से निर्मित की जाती है- चन्दन तथा देवदार की लकड़ी का बुरादा, अगर और तगर की लकड़ी के छोटे-छोटे टुकड़े, कपूर-कचरी, गुग्गुल, नागर मोथा, बलछार, जटामासी, सुगन्धवाला, लौंग, इलायची, दालचीनी, जायफल आदि। आजकल विभिन्न संस्थान हवन सामग्री निर्मित कर रहे हैं, जिनमें ये सभी पदार्थ एक अलग अनुपात में होते हैं।

यज्ञ के चिकित्सीय पहलू

प्राचीन समय से आयुर्वेदिक पौधों के धुएँ का प्रयोग मनुष्य विभिन्न प्रकार की बीमारियों से निदान पाने के लिए करते आ रहे हैं। यज्ञ से उत्पन्न धुएँ को खाँसी, जुकाम, जलन, सूजन आदि बीमारियों के इलाज के लिए इस्तेमाल किया जाता है। मध्यकालीन युग में प्लेग जैसी घातक बीमारियों से मुक्ति पाने के लिए धूप, जड़ी-बूटी तथा सुगन्धित पदार्थों का धूम्रीकरण किया जाता था।

यज्ञ द्वारा प्राप्त हुई रोगनाशक उत्तम औषधियों की सुगन्ध प्राणवायु द्वारा सीधे हमारे रक्त को प्रभावित कर शरीर के समस्त रोगों को नष्ट कर देती है तथा हमें स्वस्थ और सबल बनाती है। तपेदिक का रोगी भी यदि यक्ष्मानाशक औषधियों से प्रतिदिन यज्ञ करे तो औषधि सेवन की अपेक्षा बहुत जल्दी ठीक हो सकता है। वेदों में कहा गया है- हे मनुष्य! मैं तेरे जीवन को स्वस्थ, निरोग तथा सुखमय बनाने के लिए तेरे शरीर में जो गुप्त रूप से छिपे रोग है, उनसे और राजयक्ष्मा (तपेदिक) जैसे असाध्य रोग से भी यज्ञ की हवियों से छुड़ाता हूँ। विभिन्न रोगों की औषधियों द्वारा किया हुआ यज्ञ जहाँ उन औषधियों की रोग नाशक सुगन्ध नासिका तथ रोम कूपों द्वारा सारे शरीर में पहुँचाता है, वहाँ यही यज्ञ, यज्ञ के पश्चात् यज्ञशेष को प्रसाद रूप में खिलाकर औषध सेवन का भी काम करता है। इससे रोग के कीटाणु बहुत जल्दी नष्ट हो जाते हैं। वेदों में कहा गया है कि-

हे मनुष्य! यह यज्ञ में प्रदान की हुई रोगनाशक हवि तेरे रोगोत्पादक कीटाणुओं को तेरे शरीर में से सदा के लिए बाहर निकाल दे अर्थात् यज्ञ की रोगनाशक गन्ध शरीर में प्रविष्ट होकर रोग के कीटाणुओं के विरुद्ध अपना कार्य कर उन्हें नष्ट कर देती है।

अग्निहोत्र से पौधों को पोषण मिलता है, जिससे उनकी आयु में वृद्धि होती है। अग्निहोत्र जल के स्रोतों को भी शुद्ध करता है। यज्ञ के उपरान्त वायु में धूम्रीकरण के प्रभाव को वैज्ञानिक रूप से सत्यापित करने के लिए डॉ. सी. एस. नौटियाल, निदेशक, सी.आई.आर.-राष्ट्रीय वनस्पति अनुसन्धान संस्थान, लखनऊ व अन्य शोधकर्त्ताओं ने वायु प्रतिचयन यन्त्र का प्रयोग किया। उन्होंने यज्ञ से पूर्व वायु का नमूना लिया तथा यज्ञ के उपरान्त एक निश्चित अन्तराल में २४ घण्टे तक वायु का नमूना लिया और पाया कि यज्ञ के उपरान्त वायु में उपस्थित वायुजनित जीवाणुओं की संख्या कम थी। कुछ आँकड़ों के अनुसार, औषधीय धुएँ से ६० मिनट में ९४ प्रतिशत वायु में उपस्थित जीवाणु नष्ट हो जाते हैं। सुगन्धित और औषधीय धुएँ से अनेक पौधों के रोग जनक जीवाणु, जैसे बरखोलडेरिया ग्लूमी जो चावल में सीडलींग रॉट (Seedling rot of rice), कटोबैक्टीरियम लैक्युमफेशियन्स जो फलियों में विल्टिंग (Wilting in beans), स्यूडोमोनास सीरिन्जी जो आड़ू के उत्तकों में नैक्रोसिस (Necrosis of peach tree tissue), जैन्थोमोनास कम्पैस्ट्रिस जो क्रूसीफर्स में ब्लैक रॉट (Black rot in crueifers) करते हैं, आदि को नष्ट किया जा सकता है।

वायुजनित प्रसारण रोग के संक्रमण का एक मुख्य मार्ग है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (W.H.O. 2004) के अनुसार, विश्व में ५७ लाख मृत्यु में से १५ लाख (>25%) वायुजनित संक्रमित रोगों के कारण होती है। औषधीय धुएँ से मनुष्य में रोग फैलाने वाले रोगजनक जीवाणुओं जैसे- कॉर्नीबैक्टीरियम यूरीलाइटिकम जो यूरीनरी ट्रैक्ट इन्फैक्शन, कॉकूरिया रोजिया जो कैथेटर रिलेटिड बैक्टीरीमिया, स्टेफाइलोकोकस लैन्टस जो स्प्लीनिक ऐब्सेस स्टेफाइलोकोकस जाइलोसस जो एक्यूट पॉलीनैफ्रिइटिस ऐन्टेरोबैक्टर ऐयरोजन्स जो नोजोकॉमियल इन्फैक्षन करते हैं आदि को नष्ट किया जा सकता है। सुगन्धित तथा औषधीय धुएँ का प्रयोग त्वचा सम्बन्धी तथा मूत्र-तन्त्र सम्बन्धी विकारों

thearyasamaj.org

को दूर करने में भी किया जाता है। धुएँ के प्रश्वसन से (Inhalation) फुफ्फुसीय और तन्त्रिका सम्बन्धी विकार दूर हो जाते हैं।

औषधीय धुएँ का बीजांकुरण में महत्त्व

एक दिलचस्प खोज में पता चला है कि प्रकृति में धुँआ बीज अंकुरण को उत्तेजित करता है। विभिन्न प्रकार के कार्बनिक पदार्थों का १८०-२००C सेल्सियस तापमान पर दहन एक अधिक सक्रिय, ऊष्मीय रूप से स्थिर 3-methy1-2H-furo[2,3-C] pyron-2-one यौगिक बनाता है जो कि बीज अंकुरण को उत्तेजित करता है। धुएँ से अंकुरित पौधों की भी वृद्धि होती है, क्योंकि धुँआ बीज और अंकुरित पौधों को सूक्ष्मजीवी के आक्रमण से बचाता है, जिससे पौधे निरोगी तथा हृष्ट-पुष्ट रहते हैं।

यज्ञ के भौतिकीय पहलू

भौतिक संसार में ऊर्जा की दो प्रणालियाँ ऊष्मा और ध्वनि हैं। यज्ञ के दौरान ये दोनों ऊर्जाएँ (यज्ञ से उत्पन्न होने वाली अग्नि और गायत्री तथा अन्य मन्त्रों द्वारा उत्पन्न ध्वनि) मिलकर हमारी वांछित शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक इच्छाओं को पूर्ण करने में सहयोग प्रदान करती है। यज्ञ की अग्नि में जो विशेष पदार्थ आहुत किये जाते हैं, उन्हें अग्नि में आहुत करने का एक वैज्ञानिक आधार है। वैज्ञानिकों का दृष्टिकोण है कि मन्त्रों द्वारा उत्पन्न विद्युत-चुम्बकीय तरंगें हमारी आत्मिक इच्छाओं को लौकिक स्तर पर प्रसारित करने में मदद करती है।

यज्ञ में दहन के उत्पाद से सम्बन्धित अभी तक कुछ वैज्ञानिक पहेलियाँ अनसुलझी हुई हैं, जैसे-भौतिक विज्ञान के सन्दर्भ में यज्ञ में दहन प्रक्रिया की व्याख्या करना कठिन है, जिसके निम्न कारण हैं-

* यज्ञ में प्रयोग किये जाने वाले पदार्थों के गुण भिन्न-भिन्न होते हैं।

* जिन स्थितियों में यज्ञ होता है, वह अनिश्चित होती हैं।

पदार्थों का दहन निम्न कारकों पर निर्भर करता है-

* दहन में प्रयोग किये गये पदार्थों की प्रकृति और उनका अनुपात।

* तापमान।

* वायु की नियन्त्रित आपूर्ति

* निर्मित हुए पदार्थों के बीच आकर्षण।

यज्ञ की प्रक्रिया में औषधीय व सुगन्धित पदार्थों का वाष्पीकरण

पौधों (लकड़ी) के अन्दर प्रचुर मात्रा में सेलुलोज होता है, जिसका पूर्ण दहन होने से पहले इसका वाष्पीकरण होता है। अग्निकुण्ड में जिस प्रकार से समिधाओं को व्यवस्थित किया जाता है, उस पर अग्निकुण्ड का तापमान और वायु की आपूर्ति निर्भर करती है। अग्निकुण्ड का तापमान सामान्यत: २५० सेल्सियस से ६०० सेल्सियस तक होता है, जबकि इसकी ज्वाला का तापमान १२०० सेल्सियस से १५०० सेल्सियस तक होता है। यह तापमान यज्ञ में प्रयुक्त होने वाले मुख्यत: सभी वाष्पीय पदार्थों का वाष्पीकरण करने में सक्षम होता है। जब सेलुलोज व अन्य पदार्थों, जैसे कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन आदि का दहन किया जाता है तो पर्याप्त मात्रा में वाष्प उत्पन्न होती है, जिसमें हाइड्रोजन, ऑक्सीजन तथा कार्बनिक पदार्थों का मिश्रण होता है, जिसमें ठोस कण अत्यधिक विभाजित अवस्था में होते हैं, जो यान्त्रिक प्रसार के लिए पर्याप्त सतह प्रदान कराते हैं। इस प्रकार धुआँ कोलॉइडल कणों के रूप में कार्य करता है, जो सुगन्धित पदार्थों को वायु के तापमान और दिशा के आधार पर प्रसारित करने का कार्य करता है। कोई भी पदार्थ जलकर गैस रूप में असंख्य गुना व्यापक हो जाता है। यह बात वैज्ञानिक रूप में भी सिद्ध हो चुकी है। १९६६ में आयोजित कैलिफोर्निया यूनीवर्सिटी की एक गोष्ठी में वैज्ञानिकों ने माना कि अग्नि में किसी भी हव्य को 'ऑक्सीकृत' कर अनन्त आकाश में पहुँचा देने की क्षमता है।

वसायुक्त पदार्थों का दहन

यज्ञ में प्रयोग किये जाने वाले पदार्थ मुख्य रूप से घी तथा वनस्पति मूल के अन्य वसायुक्त पदार्थ हैं। घी, लकड़ी के तीव्र दहन में मुख्य सहायक है। सभी वसायुक्त पदार्थ फैटी एसिड (वसीय अम्ल) के संयोजन से बने होते हैं, जो आसानी से वाष्प में परिवर्तित हो जाते हैं। ग्लिसरॉल के दहन से ऐसीटोन निकाय, पायरुविक ऐल्डिहाइड, ग्लायऑक्जल आदि बनते हैं। इन प्रक्रियाओं में उत्पादित हाइड्रोकार्बन पुन: धीमे दहन से गुजरते हैं, जिसके फलस्वरूप मिथाइल और इथाइल एल्कोहॉल, फॉर्मेल्डिहाइड, एसिटेल्डिहाइड, फॉर्मिक एसिड, ऐसिटिक एसिड आदि का निर्माण होता है।

प्रकाश रासायनिक प्रक्रिया

जब सभी वाष्पशील पदार्थ वातावरण में दूर तक फैल जाते हैं, तब यह प्रक्रिया प्रकाश रासायनिक प्रक्रिया कहलाती है, जो सूर्य की किरणों की उपस्थिति में होती है।

thearyasamaj.org

ऋषि-मुनियों ने इसी कारण यज्ञ को बाहर खुले में अर्थात् धूप में करने को प्राथमिकता दी है। इस प्रकार धूम्रीकरण से उत्पन्न उत्पाद ऑक्सीकरण, अपचयन व प्रकाश रासायनिक प्रक्रिया में जाते हैं। कार्बन डाइऑक्साइड के अपचयन के बाद फॉर्मेल्डिहाइड का निर्माण होता है, जिसे निम्नलिखित रासायनिक क्रिया से दर्शाया गया है-

$$CO2+H2O+112{,}000\ Cal=HCHO+O2$$

जैसा कि विदित है, फॉल्डिहाइड वातावरण में उपस्थित हानिकारक जीवाणुओं को नष्ट करता है, इसी प्रकार यज्ञ से उत्पन्न हुए अन्य पदार्थ, जैसे फॉर्मिक अम्ल व एसिटिक अम्ल भी अच्छे रोगाणुरोधक का कार्य करते हैं। प्रकाश रासायनिक प्रक्रिया के अन्तर्गत कार्बन डाइऑक्साइड की सान्द्रता में कमी व ऑक्सीजन की सान्द्रता में वृद्धि होती है, यही कारण है कि यज्ञ करने से वातावरण शुद्ध हो जाता है।

यज्ञ में जो धूम्रीकारक पदार्थ प्रयोग में लाये जाते हैं, उनके धूम्रीकरण से कुछ प्रभाव कीट-पतंगों पर भी पड़ता है। जैसे- कपूर के धूम्रीकरण से कीट-पतंगे नष्ट हो जाते हैं। इस प्रकार वाष्पशील पदार्थों के धुएँ के सम्पर्क में आने से अनेक घातक कीट भी नष्ट हो जाते हैं।

आजकल औषधीय धुएँ का उपयोग विज्ञान की अनेक शाखाओं जैसे-कृषि, खरपतवार नियन्त्रण, उद्यान-कृषि, पारिस्थितिक प्रबन्धन, प्राकृतिक वास नवीनीकरण आदि में किया जा रहा है। इस लेख में वायुवाहित जीवाणुओं पर प्राकृतिक उत्पादों के धुएँ के पुराऔषध गुण सम्बन्धी दृष्टिकोण के महत्त्व और व्यापक विश्लेषण तथा वैज्ञानिक पुष्टीकरण को दर्शाया गया है, अतः आधुनिक युग में औषधीय वायु एवं धुएँ के महत्त्व को ध्यान में रखते हुए यह निष्कर्ष निकाला गया है कि अगर हम प्रदूषण मुक्त और रोगमुक्त जीवन व्यतीत करना चाहते हैं तो हमें अग्निहोत्र का अपने दैनिक कार्यों में समावेश करना होगा तथा यज्ञ से हम समस्त सुख, समृद्धि एवं शान्ति को प्राप्त कर सकते हैं।

(लेखक का ऐसा मानना है।)

विज्ञान प्रगति से साभार:

सम्पर्क सूत्रः- पूर्व डीन, फैकल्टी ऑफ लाइफ सांइसेज डिपार्टमेंट ऑफ बॉटनी एण्ड माइक्रोबायोलॉजी, गुरुकुल कांगड़ी यूनीवर्सिटी, हरिद्वार-२४९४०४ (उत्तराखण्ड)

मो.: ०९८३७३०८८९७

नहीं बचेगा अत्याचारी

- पं. नन्दलाल निर्भय भजनोपदेशक

सन्तों के लक्षण सुनों, आज लगाकर ध्यान।
ईश भक्त, धर्मात्मा, वेदों के विद्वान्।।
वेदों के विद्वान्, सदाचारी, गृहत्यागी।
धैर्यवान्,विनम्र,परोपकारी, वैरागी।।
सादा जीवन उच्च-विचारों के जो स्वामी।
वेदों का उपदेश करें, वे सन्त हैं नामी।।
जगत् गुरु दयानन्द थे, ईश्वर भक्त महान्।
दयासिन्धु धर्मात्मा, थे वैदिक विद्वान्।।
थे वैदिक विद्वान्, ब्रह्मचारी, तपधारी।
दुखियों के हमदर्द, सदाचारी, उपकारी।।
किया घोर विषपान, भयंकर कष्ट उठाया।
किया वेद प्रचार, सकल संसार जगाया।।
दयानन्द ऋषिराज का, जग पर है अहसान।
दोष लगाता था उन्हें, रामपाल शैतान।।
रामपाल शैतान, स्वयं बनता था ईश्वर।
करता था उत्पात, रात-दिन कामी पामर।।
बरवाला में किलानुमा, आश्रम बनाया।
उस पापी ने बड़ा-जुल्म प्रजा पर ढाया।।
उसके कुकर्म देखकर, जागे आर्य कुमार।
पोल खोल दी दुष्ट की, किया वेद प्रचार।।
किया वेद प्रचार, नहीं योद्धा दहलाए।
आचार्य बलदेव-तपस्वी आगे आए।।
किया गजब का काम, चलाया फिर आन्दोलन।
बन्द करो पाखण्ड दहाड़े मिल आर्य जन।
''नन्दलाल'' कह, नहीं बचेगा अत्याचारी।।

- ग्राम पत्रालय बहीन, जनपद पलवल (हरियाणा)

मनुष्यों को उचित है कि परमेश्वर में ही मन बुद्धि को युक्त कर विद्वानों के सङ्ग से विद्या को पा सुखी हो अन्य मनुष्यों को भी इसी प्रकार आनन्दित करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.१४

thearyasamaj.org

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एक मात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रातः एवं सायं दैनिक यज्ञ- प्रवचन, वेद-पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***- आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति निःशुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***- अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्ण रूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था निःशुल्क की जाती है। ***गोशाला***- गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का निःशुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***- वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा निःशुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***- इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोध कर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ निःशुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***- योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में निःशुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों से भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युत पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाके फोड़कर जलाते हैं असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी-छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थिति होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अतः आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

thearyasamaj.org

अतिथि यज्ञ के होता
(१६ से ३० अप्रैल २०१५ तक)

१. श्रीमती उमा मोंगा, नई दिल्ली २. श्रीमती बीना त्यागी, दिल्ली ३. श्री रमेशचन्द व श्रीमती रेखा आर्या, नई दिल्ली ४. श्री शिव कुमार मदान, नई दिल्ली ५. श्री बृजमोहन सिंगला, जालन्धर छावनी, पंजाब ६. श्री देवसीराम आर्य, सिरसा, हरियाणा ७. श्रीमती तारावन्ती कोहली, दिल्ली ८. श्री रजनीश कपूर, नई दिल्ली ९. श्रीमती स्नेहलता, अम्बालासिटी, पंजाब १०. श्री अवनीश कपूर, नई दिल्ली, ११. श्री शिवकुमार चौधरी, इन्दौर, म.प्र. १२. श्रीमती सुषमा चौधरी, इन्दौर, म.प्र. १३. श्री श्रयस्कर चौधरी, इन्दौर, म.प्र. १४. श्रीमती प्रेरणा चौधरी, इन्दौर, म.प्र. १४. श्री रवि अग्रवाल, इन्दौर, म.प्र., १५. श्रीमती ऋचा अग्रवाल, इन्दौर, म.प्र. १६. सुश्री श्रुति चौधरी, इन्दौर, म.प्र. १७. मास्टर अनव अग्रवाल, इन्दौर, म.प्र. १८. श्रीमती श्रेयसी चौधरी, इन्दौर, म.प्र. १९. मास्टर सुविज्ञा चौधरी, इन्दौर, म.प्र. २०. श्री विकास कुमार झा, जयपुर, राज. २१. श्री मदन मोहन कथुरिया व श्रीमती कमला देवी, नई दिल्ली, २२. श्री सत्येन्द्र सिंह व श्रीमती मिथलेश, मेरठ, उ.प्र. २३. श्री सुशील नवाल व श्रुति नवाल २४. श्री मथुराप्रसाद नवाल, अजमेर, २५. श्रीमती दीपा माता, अजमेर २६. श्री कोयुर, तेलंगाना, २७. श्रीमती विजयभारती कपूर, भीलवाड़ा, राज. २८. श्रीमती सुमेधा महाजन, चण्डीगढ़, पंजाब, २९. श्री स्नेहमुखिया (विनोद) मॉरिशस ३०. श्री सुरेन्द्र गोधरा, श्रीगंगानगर, राज. ३१. श्रीमती लक्ष्मी अग्रवाल, दिल्ली ३२. श्रीमती कैलाशवती कंचन, हरियाणा ३३. श्रीमती चन्द्रा महेन्दी, दिल्ली ३४. श्रीमती वन्दना अरोड़ा, गाजियाबाद, उ.प्र. ३५. श्री डी. के. जाटव, पूना, महाराष्ट्र ३६. श्री अशोक कुमार आर्य, संत कबीर नगर, उ.प्र.।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

गौभक्तों से निवेदन

ऋषि उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला में उत्पादित गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों में नि:शुल्क किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौवों को उत्तम चारा मिले इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चेक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएँगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता
(१६ से ३० अप्रैल २०१५ तक)

१. श्रीमती उमा मोंगा, नई दिल्ली २. श्री ओमप्रकाश, नई दिल्ली, ३. श्री मयंक कुमार, अजमेर ४. श्री दुर्गाशंकर, अजमेर ५. श्री नाथुलाल त्रिवेदी, भीलवाड़ा, राज. ६. श्रीमती रामप्यारी देवी, भीलवाड़ा, राज. ७. श्री ऋषभ गुप्ता, अम्बाला केन्ट, पंजाब ८. श्री विकास कुमार, जयपुर, राज. ९. श्रीमती सुशीला आर्या, मेरठ, उ.प्र. १०. श्री जयचन्द्र आर्य, मेरठ, उ.प्र. ११. श्री सत्येन्द्र सिंह व श्रीमती मिथलेश, मेरठ, उ.प्र. १२. श्री अभिषेक शुक्ला, अजमेर १३. श्रीमती अरुणा माता, अजमेर १४. श्रीमती पुष्पलता उपाध्याय, अजमेर।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

जो ईश्वर वेदविद्या से अपने सांसारिक जीवों और जगत् के गुण, कर्म्म, स्वभावों को प्रकाशित न करता तो किसी मनुष्य को विद्या और इनका ज्ञान न होता और विद्या वा उक्त पदार्थों के ज्ञान के विना निरन्तर सुख क्यों कर हो सकता है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.५४

thearyasamaj.org

हमारा परम मित्र - ईश्वर

- सुकामा आर्या

हम सब बचपन से एक तत्त्व के विषय में बहुत कुछ सुनते आए हैं, पर आज भी ध्यान से देखें तो उस तत्त्व के विषय में हमारी प्रवृत्ति वैसी नहीं बन पाई है, जैसी की होनी चाहिए। कारण, हमारी स्थिति श्रवण तक रही-

न श्रवणमात्रात् तत् सिद्धिः।

सिर्फ सुनने मात्र से किसी वस्तु की सिद्धि नहीं हो जाती। मान लीजिए- हम रुग्ण हो गए। किसी मित्र ने बताया कि अमुक दवा ले लीजिए, तो क्या हम सुनने मात्र से स्वस्थ हो जाएँगे? नहीं, हमें बाजार से दवा लानी पड़ेगी, यथोचित समय पर उसका सेवन करना पड़ेगा, तब कहीं जाकर सम्भावना है कि हम स्वस्थ हो पाएँ। ठीक यही बात उस एक तत्त्व के विषय में भी घटती है। उस तत्त्व को हमें व्यक्तिगत स्तर पर, अनुभूति के स्तर पर लाना है, तभी हम अपने जीवन को सफल बना सकते हैं। वह अद्‌भुत तत्त्व है- ईश्वर।

ईश्वर को समझने में सहायक उसका सबसे सरलतम गुण है- सर्वव्यापकता। किसी वस्तु को हम उसके गुणों से ही जानते हैं। इसी एक गुण को समझ लेने से उसके कई प्रमुख गुण भली प्रकार से समझ में आ जाते हैं।

ईश्वर सर्वज्ञ है, क्योंकि वह सर्वव्यापक है,

ईश्वर सर्वान्तर्यामी है, क्योंकि वह सर्वव्यापक है,

ईश्वर सर्वरक्षक है, क्योंकि वह सर्वव्यापक है,

वेद कहता है- **स पर्यगात्**- वह पहले से वहाँ पहुँचा हुआ है।

त्वं हि विश्वतोमुख विश्वतः परिभूरसि- सब तरफ उसके मुख हैं।

विश्वतो चक्षुः- सब जगह उसकी आँखें हैं।

अर्थात् वह ईश्वर इस जगत् के कण-कण में विद्यमान है। ''प्रभु सब में, सब कुछ है प्रभु में।'' यूँ समझें कि सारा संसार ईश्वर में डूबा हुआ है। हर दिशा में, हर सिम्त वह है-

जिधर देखता हूँ, खुदा ही खुदा है,
खुदा से नहीं चीज कोई जुदा है।
जब अव्वल और आखिर खुदा ही खुदा है,
तो अब भी वही कौन उसके सिवा है।

एक क्षण के लिए विचार करें कि माँ-बाप, भाई-बहन, सखा-मित्र आदि तब तक ही हमारी रक्षा कर पाते हैं, जब तक वे हमारे साथ हैं, हमारे साथ उपस्थित हैं। अपनी अनुपस्थिति में वे हमारा सहयोग नहीं कर पाते हैं, उनकी विवशता होती है। ईश्वर को अनुभूति के स्तर पर देखें, तो पता चलेगा कि वह हर क्षण हमारे पास है, हम उसकी उपस्थिति में उपस्थित हैं। उसकी हाजिरी में हाजिर हैं।

हम मुश्किल परिस्थिति में किससे सहायता माँगते हैं- माँ-बाप से, मित्रों से- जिनकी देने की शक्ति व सीमा सीमित है, जो दोहरे मापदण्ड वाले हैं। आज-इस क्षण अच्छे तो अगले ही क्षण बुरे, जिनके व्यवहार का हम अनुमान ही नहीं लगा पाते। दुनिया में सबसे अधिक अपूर्वानुमेय व्यवहार किसी प्राणी का है, तो वह इस छः फूट के मानव नाम के प्राणी का है। जानवरों का व्यवहार भी अधिकतम सीमा तक निर्धारित रहता है। कुत्ते को रोटी डालोगे तो वह स्नेह से पूँछ हिलाएगा, डण्डा दिखाओगे तो डरेगा, भौंकेगा, पर इस मनुष्य नामक प्राणी का तो पता ही नहीं चलता, जाने कब कौन-से पत्ते फेंक दे? परन्तु ईश्वर हमेशा एकरस है, उसके नियम अटल हैं, वह पक्षपात रहित होकर न्यायपूर्वक व्यवहार करता है, हर देश, काल व परिस्थिति में एक-सा ही रहता है। वस्तुतः वह ईश्वर ही हमारी मैत्री के सर्वाधिक लायक है।

यूँ ही काल की दृष्टि से देखें तो इस लोक के सम्बन्ध- माता-पिता, भाई-बन्धु, गुरुजन- सभी इस जीवन तक ही सीमित हैं। हम समाप्त तो सब सम्बन्ध समाप्त, पर ईश्वर से हमारा सम्बन्ध तो अनादि काल से है और अनन्त काल तक रहेगा। इस शरीर के छूटने के बाद भी- हमेशा। लोक में भी जो वस्तुएँ या सम्बन्ध या मैत्री लम्बे काल तक चलती हैं, उनको हम अच्छा समझते हैं, मूल्यवान समझते हैं। ओल्ड इज गोल्ड मानते हैं। इस दृष्टि से भी ईश्वर हमारी मैत्री के मापदण्डों पर पूर्णतया खरा उतरता है, इसलिए हमें उससे मित्रता बढ़ाने व बनाए रखने पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

हमें समस्या कहाँ आती है? हम लोक के मित्रों व सम्बन्धों को तो समय देते हैं, पर ईश्वर के लिए समय निकालना हमें मुश्किल लगता है। इसका मुख्य कारण यह है कि हमें ईश्वर के महत्त्व का पता नहीं, इसलिए सन्ध्या व ध्यान के लिए समय निकालना अत्यन्त कठिन

thearyasamaj.org

लगता है। रुचि नहीं बनती है। हमें अपने पिता जी की १-२ करोड़ की सम्पत्ति नजर आती है। मित्रों की योग्यता, धन-वैभव, गुरुजनों का ज्ञान नजर आता है, परन्तु ईश्वर का परम ऐश्वर्य हमारी आँखों से प्रायः ओझल ही रहता है। यह विचार कर लें कि जो पिताओं का भी पिता है, गुरुओं का भी गुरु है, माताओं की भी माता है- वह कितना महत्त्वपूर्ण, विशिष्ट, वरिष्ठ सहयोगी सिद्ध होगा।

दूसरे पक्ष पर दृष्टिपात करें- अगर हम जरा-सा कुछ पिता जी के खिलाफ गए तो पिता जी जायदाद से बेदखल कर देंगे। कक्षा में अध्यापक की आज्ञा का उल्लंघन किया तो वे कक्षा से बाहर जाने को कह देंगे। संस्था के अधिकारी रुष्ठ हो गए तो वे संस्था से बाहर निकाल देंगे। एक क्षण के लिए विचार करें कि क्या ईश्वर कभी हमें अपने दायरे से बाहर निकाल सकता है? कभी नहीं, कभी नहीं, कभी नहीं, क्योंकि वह सर्वव्यापक है, हर स्थान पर है। यहाँ से इस लोक से निकालेगा, तो दूसरे लोक में रख लेगा, लेकिन हमेशा अपने सान्निध्य में, अपने पास हमें रखेगा। क्या इस ईश्वरीय प्रेम के तुल्य कोई अन्य सांसारिक व्यक्ति का प्रेम हो सकता है? विचार करेंगे तो स्वयमेव ही उस परम सत्ता के प्रति प्रगाढ़ श्रद्धा, समर्पण व प्रेम का भाव उद्‌भूत हो जाएगा।

हम विकट-से-विकट परिस्थिति में डगमगाएँगे नहीं। एक बार समुद्र में कोई नवविवाहित जोड़ा नाव में बैठ कर जा रहा था। अन्य लोग भी नाव में सवार हो कर जा रहे थे। अचानक तूफान आया और नाव डगमगाने लगी। सभी लोग चिल्लाने लगे, परन्तु वह युवक प्रेम से ईश्वर का ध्यान करने लगा, ताकि अपने मन को विचलित होने से बचाकर अपनी सुरक्षा का समाधान ढूंढ सके। उसकी पत्नी ने पूछा कि सब लोग हाहाकार मचा रहे हैं और तुम ध्यान कर रहे हो? क्या तुम्हें भय नहीं लग रहा? तो उसने तत्काल पिस्तौल निकाल कर पत्नी की कनपटी पर रख दी। पत्नी मुस्कुराने लगी। युवक ने पूछा- क्या तुम्हें भय नहीं लग रहा? उसने कहा- नहीं। युवक ने पूछा- क्यों? पत्नी बोली- क्योंकि मैं जानती हूँ कि पिस्तौल मेरे प्रियतम के हाथ में है, वह मेरा नुकसान कर ही नहीं सकता। वह युवक बोला- ठीक इसी प्रकार यह नाव भी मेरे परमप्रिय मित्र, सखा ईश्वर के हाथ में है, जो उसको अभीष्ट मानकर करेगा, वही सुझाये हुए उपायों के भय से रहित होगा। यह विश्वास तभी बनता है, जब हम ईश्वर की सत्ता को सर्वव्यापक समझ लेते हैं-

आ गया तेरी शरण जब तो मुझे अब भय कहाँ?
मैं तेरा, किश्ती तेरी, साहिल तेरा, दरिया तेरा।

हमारी कमी, न्यूनता यहाँ रह जाती है, हम मानते हुए भी व्यावहारिक स्तर पर ईश्वर की अनुभूति नहीं रख पाते हैं। यूँ कहें कि थ्योरी की परीक्षा में तो सफल हो जाते हैं पर प्रैक्टिकल की परीक्षा में या तो उपस्थित ही नहीं होते या होते हैं तो अनुत्तीर्ण हो जाते हैं। हमें दोनों परीक्षाओं में पास होना है।

इसके लिए आवश्यक है कि जीवन जीते हुए, दिनचर्या करते हुए, हम अपने परम मित्र की याद बनाए रखें। हमें हर क्षण महसूस हो कि हमारा परमप्रिय मित्र साथ है-

नहीं कहता हूँ, दुनिया से जुदा हो।
मगर हर काम में यादे खुदा हो।।

हम जिस-जिस वस्तु या व्यक्ति का चिन्तन करते हैं, उससे अनुराग हो ही जाता है या यूँ कहें कि जिस-जिस वस्तु या व्यक्ति से अनुराग होता है, उस-उस का चिन्तन करने से हमें सुख मिलता है, आनन्द मिलता है, तो क्यों न उस परम आनन्दमय, सुख के भण्डार हमारे परम मित्र का चलते-फिरते, उठते-बैठते, खाते-पीते चिन्तन किया जाए, उसको स्मरण में रखा जाए। इसको करने से दूसरा लाभ यह होगा कि हम गलत, बुरे कर्मों को करने से बच जाएँगे। जैसे अगर ट्रैफिक पुलिस वाला चौक में खड़ा हो तो हम लाल बत्ती का उल्लंघन नहीं करते हैं, हमें डर, भय होता है- चालान काट दिए जाने का। ठीक उसी प्रकार हम दिनचर्या में चलते हुए भी नियमों को नहीं तोड़ेंगे, क्योंकि हमारा ट्रैफिक पुलिस वाला मित्र तो हर क्षण ड्यूटी पर तैनात है, कभी भी कहीं भी हमें अकेला नहीं छोड़ता। हाँ, हम उसे समझने महसूस करने में नाकाबिल साबित होते हैं-

दिलबर तेरा तेरे आगे खड़ा है,
मगर नुक्स तेरी नजर में पड़ा है।

बचपन से लेकर आज तक कई मित्र बनाए, कई छोड़े, कई मिले, कई बिछुड़े, आज से एक उसकी मैत्री को बनाने में लगें, जो न केवल मित्रता-दिवस पर हमें याद आए, परन्तु हमेशा के लिए हमारे साथ आत्मसात् हो जाए। हम अपने पक्ष को उस मैत्री के लिए योग्य सिद्ध करें, तभी हम इस मित्रता को सही ढंग से, प्रेम से, कृतज्ञता से निभा पाने में सफल हो पाएँगे।

- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

thearyasamaj.org

तो क्या?

- संजय शास्त्री, कनाडा

महाराष्ट्र में गोमांस पर राज्य सरकार द्वारा प्रतिबन्ध लगाते ही कुछ लोगों की मानवीय संवेदनाएँ आहत हो उठीं और उनको लगा, जैसे मानवाधिकारों पर कयामत टूट पड़ी हो। कुछ लोग भारतीय इतिहास की दुहाई देते हुए संस्कृत शास्त्रों से गोमांस-भक्षण के उदाहरण देते हुए हिन्दुओं को सलाह देने लगे कि अपने शास्त्रों की बात मानोगे या आधुनिक हिन्दुत्ववादियों की? (इस विषय में मुसलमानों का एक मतान्ध किन्तु अति मन्दगति वर्ग बहुत सक्रिय हो गया है, इसलिये इस लेख में मुसलमानों की चर्चा करने पर बाध्य हुआ हूँ।) कुछ लोगों के हृदय में आर्य और अनार्य का कथित शाश्वत वैर जाग उठा और वे चिल्ला उठे कि गोमांस-भक्षण अनार्यों की प्राचीन परम्परा रही है, विदेश से आए आर्यों ने ही इस पर प्रतिबन्ध लगाया। यह कैसी षड्यन्त्रानुप्राणित ऐतिहासिक शिक्षा है जो हमें इतना मूर्ख बनाने में सफल रही है कि हम दो परस्पर विरोधी 'ऐतिहासिक तथ्यों' को मानने लगे हैं। अजीब है- एक तरफ तो यह सिद्ध किया जाता है कि गोमांस-भक्षण आर्यों के समाज में होता था, और दूसरी तरफ यह भी बताया जाता है कि गोमांस-भक्षण भारत के मूल निवासी अनार्यों की परम्परा रही है और बाहर से आये आर्यों ने ही इस पर जबर्दस्ती प्रतिबन्ध लगाया। खैर, जो भी हो, एक बात अवश्य ही स्पष्ट है कि जो लोग इन उदाहरणों को देकर गोमांस-भक्षण को आर्यों की सामान्य परम्परा सिद्ध करना चाहते हैं, वे उन प्रसंगों की सच्चाई छुपा कर ही ऐसा करते हैं। (इसका खुलासा नीचे भारतीय आदर्श के प्रसंग में किया गया है।) लेकिन इस विषय पर फिर कभी बात करूँगा। अभी तो बस इतना ही कहना है कि गोमांस-भक्षण के उदाहरणों का इस युग से क्या सम्बन्ध है, और उनकी उपयुक्तता क्या है। इस लेख में मैं प्राचीन भारतीय शास्त्रों में गोमांस-भक्षण के उदाहरणों की समीक्षा नहीं करना चाहता। वह इस लेख की सीमा से बाहर है। ऐसी समीक्षा निष्फल भी है, क्योंकि सामान्यत: अतीत की व्याख्या व्यक्ति के मानसिक परिप्रेक्ष्य में तैयार होती है - वैचारिक और नैतिक मानदण्डों से बँधी होती है और जब तक कोई व्यक्ति इस तरह की सीमाओं से बाहर निकलने को तैयार नहीं हो, तब तक मतभेदों का समाधान असम्भवप्राय: होता है। इसको ऐसे समझा जा सकता है-

१. जिन लोगों को गोमांस-भक्षण से ऐतराज नहीं है, उनको भारतीय इतिहास के इस प्रसंग में प्राय: उद्धृत उदाहरणों की व्याख्या गोमांस-भक्षणपरक करने से भी कोई ऐतराज नहीं होगा। यदि वे गोमांस खाते हैं, तो वे कदापि नहीं चाहेंगे कि इस पर प्रतिबन्ध लगे और वे इतिहास की ढाल लेकर मैदान में कूद पड़ेंगे।

२. लेकिन जिनको गोमांस-भक्षण सांस्कृतिक पाप मालूम होता है, वे उन्हीं सन्दर्भों की व्याख्या गोमांस-भक्षण परक नहीं करेंगे। और यदि ऐसे सन्दर्भ कहीं मिलते भी हैं तो उनको प्रक्षिप्त मानकर अमान्य कर देंगे।

३. तीसरा प्रकार उन लोगों का है जो इतिहास की ऐसी बातों को गोमांस-भक्षण के विरोधी हिन्दुओं को द्वेष भावना से केवल नीचा दिखाने के लिये कहते हैं। उन्हें न तो इतिहास से कुछ लेना-देना है, और न ही गोमांस-भक्षण से। ये वे बच्चे हैं, जिनको साथी बच्चों की शान्ति भंग करने में ही मजा आता है।

४. कुछ लोग ऐसे भी हैं, जिनको यह मान लेने से कोई ऐतराज नहीं है कि अतीत में कुछ लोगों ने गोमांस खाया होगा, लेकिन ऐसा मानने वाले यह भी मानते हैं कि इतिहास अतीत की बदलती हुई राजनीतिक और सामाजिक धाराओं का प्रवाह मात्र है, जिसको पढ़कर हम वर्तमान को सुधारने के लिये शिक्षा तो ले सकते हैं, लेकिन उसे हम आज न तो अनुभव कर सकते हैं और न ही उसको जी सकते हैं।

जो भी हो, एक बात स्पष्ट है कि ऐसे उदाहरणों की व्याख्या व्यक्ति के वैचारिक और नैतिक मानदण्डों से प्रेरित होती है, जिसका त्वरित समाधान सम्भव नहीं है, इसलिये यह लेख दुर्जनपरितोषन्याय से लिखा गया है। माना कि प्राचीन काल में कुछ लोगों ने गोमांस खाया होगा, तो क्या?

गोमांस-भक्षण के उदाहरण

जो गोमांस-भक्षण के उदाहरण दिये जाते हैं, वे इतने छिटपुट और प्रसंगत: क्षुद्र हैं कि उनके आधार पर गोमांस-भक्षण को सिद्ध करने की बात पर प्रमाण-शास्त्र को मानने वाला कोई भी व्यक्ति हँसेगा। उसका कारण है कि गौ के प्रति आर्यों की पवित्र भावना शाश्वत है। वेदों और दूसरे संस्कृत ग्रन्थों में गोमांस-भक्षण के उदाहरण देने वाले भी यह मानते हैं कि हिन्दुओं के प्राचीनतम शास्त्र ऋग्वेद से

thearyasamaj.org

लेकर आज तक गौ के प्रति पवित्रभावना अविच्छिन्न रूप से मिलती है। ऋग्वेद में गाय को अघ्न्या (जिसको नहीं मारना चाहिये) कहा गया है और यही भावना बाद के ग्रन्थों में विस्तार से मिलती है। यदि गोमांस-भक्षण के उदाहरणों और गोहत्या को पाप तथा गोरक्षा को पुण्य मानने वाले उदाहरणों का परिमाण देखा जाए तो तुलना ऐसी होगी-गोहत्या से पाप और गोरक्षा से पुण्य मिलने का बखान करने वाले उदाहरण एक महासागर की तरह हैं, जिसमें गो मांस खाने के उदाहरण कुछेक तिनकों की तरह हैं। ऐसा क्यों है कि ये लोग उन छिटपुट उदाहरणों को तो प्रमाण मान रहे हैं, लेकिन बाकी महासागर की उपेक्षा कर रहे हैं? ऐसा किसी न किसी स्वार्थ या काम के वशीभूत होकर दुराग्रही होने पर ही होता है। प्रमाण-शास्त्र को मानने वालों के लिये यह हास्यास्पद ही होगा कि गोरक्षा की असीम विच्छिन्नधारा की उपेक्षा कर दो-चार वाक्यों को प्रमाण मानकर सांस्कृतिक ऐतिहासिक धारा को मोड़ने का प्रयास किया जाए।

किसी घटना के केवल उदाहरण मिलने से ही ऐसी घटनाएँ विधान तो नहीं बन जाती हैं। यह सोचना चाहिये कि उस युग में भी आदर्श क्या था? इस विषय में भी इतिहासकारों को कोई सन्देह नहीं है कि तब भी गौ के प्रति सम्मान भावना रखना ही आदर्श माना जाता था। न केवल इतना, बल्कि किसी प्रकार के मांस को न खाना ही उनका आदर्श था। तो फिर आदर्श आचार से उनके आचार को सिद्ध करने में इतना परिश्रम क्यों कर रहे हैं ये लोग?

और फिर मनुष्य कभी भी धर्मशास्त्र का सर्वथा अक्षरश: पालन नहीं करता है। कितने ईसाई और मुसलमान हैं, जो बाइबिल और कुरान की अच्छी शिक्षाओं का अनुसरण करते हैं? मनुष्य पहले स्वभावत: मनुष्य ही होता है, उसकी धार्मिक पहचान भी अक्सर उसके स्वभाव के नीचे दबकर रह जाती है। जैसे ईसाई या मुसलमान अपने धर्म का अक्षरश: पालन नहीं करते हैं, वैसे ही कुछ हिन्दू भी नही करते हैं। ऋषि कपूर जैसे सुविख्यात कलाकार, जिनका परिचय हिन्दू के रूप में ही है, आज भी गोमांस खाते हैं। उन्होंने लिखा था कि ''मुझे गुस्सा आ रहा है। खाने को धर्म से आप क्यों जोड़ रहे हैं? मैं बीफ खाने वाला एक हिन्दू हूँ। तो क्या, इसका मतलब यह है कि मैं बीफ नहीं खाने वाले की अपेक्षा कम धार्मिक हूँ? सोचो!'' और यह महोदय यहाँ तक लिख बैठते हैं कि ''वैसे मुझे मेरे उन मुस्लिम दोस्तों की तरह पार्क चॉप्स भी बेहद पसंद हैं जो मेरी तरह सोचते हैं। जब आप धर्म को खाने से जोड़ते हैं तो वे भी आप पर हँसते हैं।'' भारत के अहिंसा के आदर्श और गौ के प्रति देवी तथा मातृवत् भाव के इतिहास से परिचित व्यक्ति इसका क्या उत्तर देगा, यह कहने की आवश्यकता नहीं है, लेकिन इसका उत्तर मशहूर शायर गालिब से मिलता है । १८५७ के स्वतन्त्रता संग्राम के बाद पुन: अंग्रेजी शासन की प्रतिष्ठा हो गयी और अंग्रेजों ने दिल्ली में संदिग्ध लोगों की धरपकड़ शुरू की । इसी प्रसंग में एक बर्न नाम के कर्नल ने अपनी टूटी-फूटी उर्दू में गालिब से पूछा, ''तुम मुसलमान हो?'' गालिब ने कहा, ''आधा।'' ''इसका मतलब?'' कर्नल ने पूछा तो गालिब ने जवाब दिया, ''मैं शराब पीता हूँ, लेकिन सूअर नहीं खाता।'' अर्थात् यदि गालिब शराब भी नहीं पीते तो पूरे मुसलमान होते और यदि शराब पीते और सूअर भी खाते तो मुसलमान ही नहीं रहते। खैर, जो भी हो, क्या यह उचित है कि ऋषि कपूर जैसे लोगों के उदाहरण से यह सिद्ध किया जाए कि आज हिन्दुओं में गोमांस खाना मान्य है? यदि नहीं तो, इतिहास में क्यों इस तरह की मानसिकता थोपने की कोशिश हो रही है? इन्द्रियों का दास हो चुके मनुष्य के लिये धर्मशास्त्र व्यर्थ हैं। धर्म का ज्ञान केवल उन्हीं को होता है, या हो सकता है, जो स्वार्थ और काम की भावना के वशीभूत नहीं हैं। स्वार्थान्ध और कामान्ध व्यक्ति के लिये तो शास्त्र नियम अभिशाप की तरह हैं, मानवाधिकारों का उल्लंघन है। ऋषि कपूर जैसे लोगों की यही करुण व्यथा है- गोवध पर प्रतिबन्ध से उनके मानवाधिकारों का उल्लंघन हो रहा है।

इसी प्रसंग में एक बात और। यदि इन लोगों को भारत के अतीत से इतना ही प्यार और मान्य-भावना है, तो इनको यह भी समझना चाहिये कि उस युग के आचरणों की यथावत् प्रतिष्ठा के लिये जितना महत्त्वपूर्ण उस युग की बातों के होने का है, उतना ही महत्त्वपूर्ण कुछ बातों का नही होना भी है। उस समय ईसाइयत और इस्लाम भारत में तो क्या दुनिया में भी नहीं थे। तो जो लोग प्राचीन हिन्दू धर्म में गोमांस-भक्षण को प्रमाण मानकर आचरणीय मानते हैं, तो क्या उनको हिन्दू धर्म को स्वीकार कर अपनी आस्था को खुले रूप में प्रकट नहीं करना चाहिये? जब तक ऐसे लोग वैदिक धर्म और आचरण को स्वीकार न कर लें, तब तक उन्हें वैदिक या हिन्दू धर्म में आस्था रखने वालों को ''अतीत की किस परम्परा का अनुसरण करना चाहिये'' के विषय में बोलने का कोई अधिकार ही नहीं

thearyasamaj.org

है।

इतिहास में किसी घटना के उदाहरण मिलना भी उनको हर युग और देश में स्वीकार करने का कारण नहीं हो सकता। भारतीय परम्परा में संस्कृति को प्रवाहमान माना गया है, जो हर युग में बदलती रहती है। इतिहास में इस तरह की परम्पराएँ रही हैं, जिनके विषय में आज सोचना भी मन में जुगुप्साभाव पैदा करता है। जैसे कि ईरान में सगे सम्बन्धियों में आपस में शादी की परम्परा थी, जिसको पूरी धार्मिक और कानूनी मान्यता थी। यहाँ तक कि माँ-बेटे, बहन-भाई और पिता-बेटी की शादी की भी बहुप्रचलित परम्परा थी। यदि ग्रीक इतिहासकार हेरोडोटस को प्रमाण माना जाए तो ऐसी परम्पराएँ भी थीं, जब किसी के बीमार होने पर उसी के सम्बन्धी उसको मारकर, पकाकर उसका भोग लगाते थे। क्या गोमांस के छिटपुट उदाहरणों के आधार पर हिन्दुओं की धार्मिक भावना से खिलवाड़ करने को जायज ठहराने से पहले सगे सम्बन्धियों से शादी करने और बीमार सम्बन्धियों का भोग लगाने की परम्परा को कानूनी रूप से स्वीकार कर लिया जाये?

शास्त्र में कही गयी बातों के आचरणीय या अनाचरणीय होने के विषय में कामसूत्र में एक ही बात दो बार सावधान करने के लिये कही गयी है-

न शास्त्रमस्तीत्येतेन प्रयोगो हि समीक्ष्यते/न शास्त्रमस्तीत्येतावत् प्रयोगे कारणं भवेत्। शास्त्रार्थान् व्यापिनो विद्यात् प्रयोगांस्त्वेकदेशिकान्।।

(कामसूत्र, २.९.४१,७.२.५५)।

शास्त्र में किसी बात की चर्चा है, केवल इसी आधार पर उसका प्रयोग या आचरण नहीं किया जा सकता, क्योंकि शास्त्र का विषय व्यापक होता है, जबकि प्रयोग एकदेशिक होते हैं, अर्थात् शास्त्र विभिन्न देश और काल की चर्चा करते हैं, उनका रिकार्ड रखते हैं, लेकिन प्रयोग प्रयोक्ता की शक्ति, समय, देश और परम्परा के अनुसार ही होते हैं, सर्वकालीन और सर्वजनीन नहीं। यही कारण है कि काम शास्त्र में रागवर्धक विचित्र प्रयोगों का विवरण देने के बाद उनका यत्नपूर्वक निवारण भी कर दिया गया है (कामसूत्र ७.२.५४)।

भारतीय आदर्श- अब आते हैं भारतीय आदर्श पर। गोमांस की बात छोड़ो, भारतीय परम्परा में तो किसी भी प्राणी के मांस भक्षण से सर्वथा निवृत्ति को ही आदर्श माना जाता था। मुसलमानों के इस धूर्त वर्ग ने मनु का भी एक श्लोक भारत में मांस भक्षण के पक्ष में प्रमाण के रूप में प्रचारित किया है। इसमें कहा गया है कि भोक्ता अपने खाने लायक पदार्थों को खाने से किसी दोष का भागी नहीं होता है। इन खाने लायक भोजनों में प्राणियों को भी गिना गया है (मनु ५.३०)। विशेष बात यह है कि भारतीय विद्वानों ने इसको प्राण-संकट होने पर मान्य माना है। जैसे कि मनु के व्याख्याकार मेधातिथि ने इस श्लोक की व्याख्या में कहा है कि इसका मतलब यह है कि प्राणसंकट में हों तो मांस भी अवश्य खा लेना चाहिये (**तस्मात् प्राणात्यये मांसमवश्यं भक्षणीयमिति त्रिश्लोकीविधेरर्थवादः।**) ऐसा भी नहीं है कि यह मेधातिथि की मनमर्जी से की गई व्याख्या है। यह मनु के अनुरूप ही है। ऊपर उद्धृत श्लोक के बाद मनु ने प्राणियों की अहिंसा का गुणगान कई श्लोकों में करते हुए मांस भक्षण को पुण्यफल का विरोधी माना है। उन्होंने यहाँ तक कहा है कि यदि कोई व्यक्ति सौ साल तक हर साल अश्वमेध यज्ञ करता रहे और यदि कोई व्यक्ति मांस न खाए तो उनका पुण्यफल समान होता है (५.५३)। सन्तों के पवित्र फल-फूल भोजन मात्र पर निर्वाह करने वाले को भी वह पुण्यफल नहीं मिलता है जो कि केवल मांस छोड़ने वाले को मिलता है। मनु ने मांस की बड़ी अच्छी परिभाषा देते हुए कहा है कि-

मांस भक्षयितामुत्र यस्य मांसमदाम्यहम्।
एतन्मांसस्य मांसत्वं प्रवदन्ति मनीषिणः।।

- समझदार लोग कहते हैं कि मांस को मांस इसलिये कहा जाता है, क्योंकि मैं आज जिसको खा रहा हूँ (मां) मुझे भी (सः) वह परलोक में ऐसे ही खाएगा। और मनु गौ को तो सर्वथा अवध्य मानते हैं और उसकी रक्षा करना मनुष्य मात्र का कर्त्तव्य मानते हैं। इसी प्रसंग में ऊपर दिया कामसूत्र विषयक परिच्छेद (भारतीय आदर्श शीर्षक से पहले) एक बार और देख लें तो विषय और भी स्पष्ट हो जाएगा। एक शास्त्र होने के नाते मनुस्मृति में चाहे मांस-भक्षण की चर्चा है, लेकिन जिस विस्तृत स्पष्टता के साथ इसको अपुण्यशील माना है, वह मांस-भक्षण की स्वीकृति के पक्ष में नहीं, अपितु उसके साक्षात् विरोध में खड़ा है। तब भी यदि कोई इसमें मांस-भक्षण की स्वीकृति को सिद्ध करने की चेष्टा करता है, तो या तो वह मूढ़ अज्ञानी है, या धूर्त है।

हिन्दू बनाम गैर-हिन्दू

यह तर्क भी दिया जाता है कि गोहत्या केवल हिन्दुओं के लिये पाप है, दूसरे धर्मावलम्बियों (ईसाई और मुसलमानों) के लिये तो नहीं। भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश

thearyasamaj.org

है और शासन को एक धर्म की मान्यताओं के आधार पर दूसरे धर्मावलम्बियों के मानवाधिकारों का हनन नहीं करना चाहिये।

तर्क तो ठीक है, लेकिन बाकी तर्कों की ही तरह पक्षपाती है। कुरान केवल मुसलमानों के लिये ही तो पवित्र है, पैगम्बर मुहम्मद साहब भी केवल मुसलमानों के लिये पैगम्बर हैं, तो क्या मुसलमान यह स्वीकार करेंगे कि दूसरे धर्मावलम्बी कुरान के साथ जैसा चाहे व्यवहार कर सकते हैं? क्या ईसाईयों को यह स्वीकार होगा कि यदि कोई सूली पर लटके ईसा की काष्ठमूर्ति को जलाकर ठण्ड से सिकुड़ते बदन को सेक ले? यदि मुसलमानों और ईसाइयों को यह स्वीकार नहीं होगा तो उनको हिन्दुओं की धार्मिक भावनाओं का ध्यान रखना ही चाहिये। गाय का प्रश्न केवल खाने-पीने तक नहीं है, गाय को श्रद्धाभाव से, पवित्र देवी के रूप में देखा जाता है। यदि एक-दूसरे की भावनाओं का ध्यान नहीं रखेंगे, तो अतीत की तरह दंगों की आग दोनों ही तरफ के लोगों को झुलसाती रहेगी। समय-समय की बात है - कभी मुसलमानों-ईसाइयों का पलड़ा भारी होगा तो कभी हिन्दुओं का, लेकिन इस हठधर्मिता से कोई समाधान नहीं होगा। समाधान केवल तभी होगा जब **आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।** - ''जो व्यवहार अपने प्रति पसन्द नहीं, वह व्यवहार दूसरों के प्रति भी न करें'' का पालन किया जाए।

और ऐसा भी क्यों है कि मुसलमानों का एक वर्ग हिन्दुओं के प्रति विद्वेषभावना से बाबर, हुमायूँ, औरंगजेब जैसे कट्टरपन्थी मुगलों की केवल गन्दी विरासत को ही ढोने और उसके लिये मर मिटने के लिये तैयार रहता है? यह वर्ग इन शासकों की उन बातों पर कभी ध्यान क्यों नहीं देता, जिनसे भारतीय समाज में सौहार्दभाव को बढ़ावा मिले और शान्ति स्थापित हो सके? इसके ऐतिहासिक प्रमाण हैं कि हिन्दुओं की धार्मिक/सांस्कृतिक भावनाओं के भड़क जाने के भय से बाबर ने न केवल अपने शासन में गोवध पर पाबन्दी लगा रखी थी, बल्कि अपने बेटे हुमायूँ को भी इसको जारी रखने का हुक्म दिया था। अकबर ने भी अपने शासन में गोवध पर पाबन्दी लगा रखी थी। यहाँ तक कि औरंगजेब जैसे कट्टर और परधर्मद्वेषी शासक ने भी गोवध पर मृत्युदण्ड घोषित कर रखा था और इसी परम्परा को आखिरी मुगल बादशाह बहादुरशाह जफर ने भी जारी रखा था।

जहाँ तक बात है अल्पसंख्यकों के मानवाधिकारों की रक्षा की, तो यह रक्षा यदि बहुसंख्यकों की धार्मिक भावनाओं को आहत करके होती है तो सर्वथा अनुचित है। और फिर केवल कुछेक व्यक्तियों के मानवाधिकारों की ही बात क्यों हो? क्या बहुसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा नहीं होनी चाहिये? ऐसा भी नहीं है कि राज्य सरकार द्वारा पारित यह नियम केवल अल्पसंख्यकों पर लागू होगा, यह तो सभी पर लागू होगा- ऋषि कपूर जैसे और भी लोग होंगे जो अल्पसंख्यकों की श्रेणी में नहीं आते हैं। उन पर भी लागू होगा। इस तरह की सर्वजन-समभाव की सुविधा गैर-मुस्लिमों को मुगल सल्तनत में कभी नहीं मिली।

इन्हीं अधिकारों की भाषा बोलते-बोलते मुसलमानों का यह वर्ग एक और देश विभाजन हो जाने की धमकी देने लगा है। देश विभाजन होगा या नहीं, इसका जवाब तो समय ही देगा, लेकिन मुसलमानों के भारत में अधिकार की चर्चा के विषय में मैं इस्लामी धर्मशास्त्र, परम्परा, और इतिहास के सर्वश्रेष्ठ विद्वानों में से एक मौलाना वहीदुद्दीन खान के मन्तव्य के साथ इस लेख को समाप्त करता हूँ। सन् २००७ में बीबीसी ने आजादी के साठ वर्ष पूरे होने के अवसर पर एक लेखमाला छापी थी, जिसमें मौलाना वहीदुद्दीन खान के मन्तव्य भी छपे थे। उसका एक अंश बीबीसी से ही उद्धृत करता हूँ-

इस्लामी मौलाना वहीदुद्दीन खान कहते हैं कि मुसलमानों को भारत में जो कुछ मिला है, वह हिन्दू समुदाय की मेहरबानी है और उन्हें इस देश में जो कुछ भी मिला है, उसका उन्हें अधिकार ही नहीं था, इसलिए उन्हें ज्यादा उम्मीद नहीं करनी चाहिए। इस्लामी विद्वान् मौलाना वहीदुद्दीन खान कहते हैं, ''स्वतन्त्रता आंदोलन के दौरान मुसलमानों ने जो बलिदान दिए, उनके बदले उन्हें पाकिस्तान के रूप में एक अलग देश मिल गया और इस तरह उन्होंने अपनी कुर्बानियों को भुना लिया। विभाजन की दलील ही यह थी कि भारत हिन्दू का और पाकिस्तान मुसलमान का, तो फिर अब भारत में उनका अधिकार कैसा? इसके विपरीत हिन्दू समुदाय ने बड़ी बात की है कि आजाद भारत में भी मुसलमानों को बराबरी का दर्जा दे दिया।''

उपसंहार- इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए केवल मूर्ख व्यक्ति ही ऐसा दुराग्रह करेगा कि चूँकि पहले कुछ लोगों ने ऐसा किया था, इसलिये आज भी ऐसा करना चाहिये। युग बदल गया है, कुछ आचार-विचार बदल गये हैं और कुछ आचार-विचार समाप्त-प्राय हैं। कुछ

thearyasamaj.org

हो गयी हैं, तो कुछ बलवती हो गयी हैं। आधुनिक भारतीय इतिहास को सप्रमाण जानने वाला हर विद्वान् यह मानता है कि पिछले कुछ सौ वर्षों में हुए हिन्दू-मुस्लिम द्वेष और दंगों के पीछे सबसे बड़ा कारण गोहत्या से जुड़ी घटनाओं का होना रहा है। १८५७ में हुए स्वतन्त्रता संग्राम के दिल्ली में विफल हो जाने का एक कारण गोहत्या के कारण हिन्दू-मुस्लिम लोगों का बँट जाना भी था, जिसका अंग्रेजों ने पूरा लाभ उठाया। ऐसे में सवाल यह नहीं है कि पहले भारत में क्या होता था और क्या नहीं होता था। सवाल यह है कि आज की असलियत क्या है? आज हिन्दुओं के लिये गौ एक धार्मिक पहचान है और उसकी रक्षा करना धार्मिक कर्त्तव्य। जबकि गोमांस खाने वाले किसी भी व्यक्ति के लिये न किसी त्यौहार पर और न किसी दूसरे अवसर पर गोमांस खाना धार्मिक या सांस्कृतिक कर्त्तव्य है। भारत के अन्तिम मुगल बादशाह बहादुरशाह जफर ने गोहत्या पर पाबन्दी लगाई और गोवध करने वाले को तोप से उड़ा दिये जाने की घोषणा की तो दिल्ली के दो सौ प्रतिष्ठित मुसलमानों ने उनके पास जाकर गुहार लगाई कि ईद के मौके पर उनको गोहत्या करने दी जाए। जफर आग-बबूला हो गये और बोले कि मुसलमान का धर्म गाय की बलि पर निर्भर नहीं है। जैसा पहले कहा गया है, यहाँ तक कि धार्मिक रूप से क्रूर पहचान रखने वाले मुगल बादशाह भी कुछ हद तक हिन्दुओं की भावनाओं को ध्यान में रखते हुए गोहत्या पर पाबन्दी लगा सकते हैं, तो क्या धर्म-निरपेक्ष भारत में सामाजिक समरसता और शान्ति बनाए रखने के लिये गोवध पर प्रतिबन्ध नहीं लगाया जा सकता है? क्या गोवध पर प्रतिबन्ध के खिलाफ लड़ाई केवल खाने की लड़ाई है या इसके पीछे सामाजिक समरसता को भंग करने वाले कुछ धूर्त हैं? क्या हम भारत में परस्पर वैमनस्य ही फैलाते रहेंगे?

- बी.बी.सी. हिन्दी,
शुक्रवार, ०५ अक्टूबर २००७

पुस्तक - समीक्षा

पुस्तक का नाम - चारों वेदों के समान मन्त्रों का तात्विक चिन्तन

लेखक - डॉ. चन्द्रकान्त गर्जे-पुणे

प्रकाशक - घुड़मल प्रहलाद कुमार, हिण्डौन सिटी, राजस्थान

मूल्य - १५०/-

वेद की यह महनीयता है कि ऋषि, देवता, छन्द एवं स्वरांकन के आधार पर भी अर्थ में परिवर्तन होता है। वेद विविध विद्याओं एवं ज्ञान-विज्ञान की गंगोत्री है, अत: ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद के मन्त्रों से नये-नये अर्थ प्रकाशित हों- यही पुनरावृत्ति का अभिप्राय है। इस सम्बन्ध में चिन्तन की, नूतन लेखन की महती आवश्यकता को देखते हुए, विद्वान् लेखक डॉ. चन्द्रकान्त गर्जे ने अपनी लेखनी उठाई और सतत स्वाध्याय एवं चिन्तन के बल पर इस क्लिष्ट विषय पर गम्भीरता से लेखन प्रारम्भ किया। माननीय प्रो. गर्जे जी की प्रौढ़-मनीषा का सुफल अब पुस्तक के रूप में प्रकाशित हो रहा है। उनकी अनवरत साधना से प्रसूत इस पुस्तक को पढ़कर वेदानुरागी लाभान्वित होंगे, ऐसा मुझे पूर्ण विश्वास है। प्रो. चन्द्रकान्त गर्जे ने इस पुस्तक के माध्यम से सिद्ध किया है कि जिन मन्त्रों की पुनरावृत्ति दिखाई देती है, उनमें कोई अन्य महत्त्वपूर्ण अर्थ छिपा हुआ है।

मैं विद्वान् लेखक को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ प्रदान करते हुए ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वेदरूपी सूर्य के प्रकाश से धरती का अन्धकार दूर हो और सम्पूर्ण वसुधा प्रकाशित हो जाये।

- प्रो. महावीर अग्रवाल, कुलपति,
उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार

परोपकारी के सुधी पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

परोपकारी शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें अन्यथा व्यक्ति के नाम से शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। परोपकारिणी सभा आप सभी का सहयोग चाहती है।

thearyasamaj.org

स्तुता मया वरदा वेदमाता-१०

मन्त्र में एक वाक्य आया है- **वाचं वदतं भद्रया**- वाणी सभी बोलते हैं, वाणी के प्रयोग दोनों हो सकते हैं। हानि के, लाभ के, मृदु के, कठोर के, सत्य के, असत्य के। कोयल की भाँति सभी की वाणी मीठी होती, सब एक-दूसरे के साथ मधुर वाणी का व्यवहार करते तो किसी को यह कहने की आवश्यकता ही नहीं होती कि मधुर वाणी बोलनी चाहिए। यदि ऐसा होता तो अच्छा नहीं होता, क्योंकि तब मेरा कोई अधिकार ही नहीं होता, मुझे मेरी इच्छा का प्रयोग करने का अवसर ही नहीं मिलता, विवेक की आवश्यकता ही नहीं पड़ती। कोई दूसरे से अलग नहीं होता, कोई किसी से अच्छा तो किसी से बुरा भी नहीं होता। इस परिस्थिति में मेरे होने का अर्थ ही क्या होता? मेरी सत्ता मेरे अधिकार से प्रकट होती है, मेरा अधिकार मेरे अस्तित्व का प्रकाशक है।

जितना मुझे अच्छा करने का अधिकार है, उतना ही मुझे बुरा करने का अधिकार भी है। उसे मुझसे कोई नहीं छीन सकता, इसी कारण उनके फल को भी मुझसे कोई अलग नंहीं कर सकता। यही कारण है कि मुझे मेरे कर्म का फल मिलता है, क्योंकि वे मेरे हैं, चाहे वे अच्छे हैं, चाहे वे बुरे। इसीलिए उपदेश देने की आवश्यकता पड़ती है। उपदेश से मेरे विवेक पर प्रभाव पड़ता है, मैं अपने विचार को बदल सकता हूँ। इसी प्रक्रिया को संकल्प-विकल्प कहा गया है। जब मनुष्य सोचता है कि मैं यह करूँगा तो मुझे लाभ होगा। मैं सोचता हूँ- मैं ऐसा करूँगा तो मेरी हानि होगी, मैं ऐसा नहीं करूँगा। यह मेरी दशा, मेरे निर्णय की भूमिका है। मैं निश्चय कर लेता हूँ, तब वह मेरा निर्णय होता है, उसका फल अच्छा या बुरा मेरा ही होता है।

वाणी भी मेरी है, मैं इसका अच्छा या बुरा कैसा भी उपयोग कर सकता हूँ। जब अच्छा उपयोग करता हूँ तो मुझे अच्छा फल मिलता है, बुरा उपयोग करता हूँ तो बुरा फल मिलता है। मुझे मेरी वाणी के अच्छे-बुरे का ज्ञान होना चाहिए। वेद कहता है- लाभ के लिए, पुण्य के लिये भद्र वाणी का प्रयोग करना चाहिए। भद्र का अर्थ शरीर के लिए, वर्तमान में लाभप्रद और मन, बुद्धि, आत्मा के लिए शान्तिप्रद होना है। यदि ऐसा नहीं तो केवल मधुर वाणी से भी कार्य चल सकता था। हम समझते हैं कि मीठा बोलना ही पर्याप्त है पर केवल मीठा नहीं, वह परिणाम में भी लाभप्रद होना चाहिए। इस मन्त्र भाग में बोलने वालों के लिए बहुवचन का प्रयोग किया गया है, अर्थात् परिवार में सभी सदस्यों को एक-दूसरे के साथ कल्याण कारिणी वाणी का प्रयोग करना चाहिए। वाणी का प्रभाव ही व्यवहार को प्रभावित करता है। मनुष्य आदर से बोलता है तो उसे प्रत्युत्तर में अनुकूल ही उत्तर प्राप्त होता है। यदि कठोरता से, असभ्यता से बोलता है तो निकटस्थ व्यक्ति भी अपमान का अनुभव करता है।

वाणी के सम्बन्ध में महाभारत में एक शिक्षाप्रद प्रसंग आया है। युधिष्ठिर युद्ध भूमि में घायल होकर शिविर में चिकित्सा के लिये उपस्थित हुए हैं। अर्जुन को बड़े भाई के घायल होने का समाचार मिलता है, वह तत्काल युद्ध छोड़ भाई को देखने शिविर में पहुँचता है। युधिष्ठिर ने पूछा- क्या युद्ध जीत लिया? अर्जुन ने कहा- नहीं। युधिष्ठिर ने अर्जुन के गाण्डिव को धिक्कार कह दिया। अर्जुन को क्रोध आया, उसने अपने बड़े भाई को मारने के लिए तलवार उठा ली। अर्जुन ने कहा- मेरी प्रतिज्ञा है कि जो गाण्डिव को धिक्कारेगा, उसके प्राण हरण करूँगा। श्री कृष्ण ने समझाया- मारना केवल तलवार से नहीं होता, बड़े भाई को 'तू' कह दे तो भी वह मर जायेगा। अर्जुन ने कह तो दिया, परन्तु फिर सोचने लगा कि उसने बड़े भाई का अपमान किया है। उसने कहा- अब इस अपराध के लिए मैं मरूँगा। श्री कृष्ण ने कहा- क्यों मरते हो? मरना भी कई प्रकार का होता है। मनुष्य के लिए आत्म-प्रशंसा भी मरने के समान है, तुम अपनी प्रशंसा स्वयं करो, मर जाओगे। मनुष्य वाणी से ही मरता है और वाणी से जीवन पाता है, अतः वेद ने कल्याणकारिणी वाणी के प्रयोग करने का आदेश दिया है।

क्रमशः ....

thearyasamaj.org

संस्था - समाचार

१६ से ३० अप्रैल २०१५

वैशाख की लू में लिपटी सूर्य की किरणें तन और मन को झुलसा रही हैं, पर आना सागर की जलराशि और ऋषि उद्यान की वनराजि तापमान को सम बनाने में बड़ा योगदान दे रही है। गीता के समत्व योग को जैसे इन्होंने आत्मसात् कर लिया है। संस्था के पाक्षिक समाचारों की चर्चा करें तो स्तुति, प्रार्थना और उपासना से युक्त यज्ञादि कर्म नियमित रूप से सम्पन्न हुए। प्रवचन, अनुशीलन और उद्‌बोधन के साथ ही गुरुकुल की कक्षाएँ नियमित रूप से चलीं। आश्रमवासियों एवं अतिथियों के लिए भोजन-आवास आदि की व्यवस्था के साथ ही गोशाला, चिकित्सालय और पुस्तकालय की गतिविधियाँ भी सन्तोषजनक रहीं। कार्यालय और यन्त्रालय की तत्परता से 'परोपकारी' का अंक आपको नियमित रूप से मिल रहा है। कार्य-व्यवस्थाओं और आयोजनों के विकल्प कई हो सकते हैं, पर हमें सत्य और न्यायकारी पथ ही चुनना है। यही संकल्प हमारी प्रेरणा बना हुआ है। कहा भी है-

ग्रीष्म या सावन बनें, दोनों हमारे हाथ में हैं।
छिद्र या छाजन बनें, दोनों हमारे हाथ में हैं।
मोह, हिंसा, भोग भी हैं, प्रेम, करुणा, योग भी हैं।
पतित या पावन बनें, दोनों हमारे हाथ में हैं।

प्रातःकालीन स्वाध्याय-चिन्तन, मनन और अनुशीलनः- महर्षि मनु की 'मनुस्मृति' के दूसरे अध्याय का समापन करते हुए **आचार्य सोमदेव जी** ने ब्रह्मचारियों के लिये निर्दिष्ट कर्त्तव्यों का सिंहावलोकन किया। तीसरे अध्याय में समावर्त्तन, विवाह एवं पञ्चयज्ञ विषयक नियमों, उपनियमों एवं निर्देशों का आकलन हुआ है। समावर्त्तन कब करें, इस सम्बन्ध में मनु महाराज कहते हैं-

वेदानधीत्य वेदौ वा वेदं वाऽपि यथाक्रमम्।
अविलुप्त ब्रह्मचर्यो गृहस्थाश्रममावसेत्।।२।।

अर्थात् ब्रह्मचारी चार, तीन, दो अथवा एक वेद को यथावत् पढ़ते हुए अखण्डित ब्रह्मचर्य का पालन करे और फिर गृहस्थाश्रम में प्रवेश करे। समावर्त्तन का अर्थ है-वापस लौटना। यह एक संस्कार है, जिसको स्नान भी कहते हैं, इसी कारण समावर्त्तन करने वाले को 'स्नातक' कहा जाता है। मनु जी ने विवाह के विषय में कई निर्देश दिये हैं। उन्होंने विवाह की आयु एवं विवाह योग्य कन्या की बात करके विवाह में त्याज्य दस कुलों की चर्चा की है।

मनु ने आठ प्रकार के विवाह बताए हैं-

ब्राह्मो दैवस्तथैवार्षः प्राजापत्यस्तथाऽऽसुरः।
गान्धर्वो राक्षसश्चैव पैशाचश्चाष्टमोऽधमः।।२१।।

अर्थात् ब्राह्म, दैव, आर्ष, प्राजापत्य, आसुर, गान्धर्व, राक्षस और पैशाच- ये आठ प्रकार के विवाह होते हैं। इनमें से प्रथम चार ही चारों वर्णों के लिए उत्तम हैं, शेष चारों निन्दित, अहितकर एवं अधर्मानुकूल हैं। इसी तरह दहेज लेने और देने को भी पाप कर्म ही कहा गया है। मनु महाराज ने नारियों की अस्मिता को बहुत ही पूजनीय भाव से स्वीकार किया है। उनके प्रसिद्ध श्लोक **'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।'** में हमारी कई सामाजिक विषमताओं को समाप्त करने का उपाय छिपा हुआ है, आवश्यकता इस बात की है कि हम उसका निष्ठापूर्वक पालन करें। जिन परिवारों में नारियों का सम्मान नहीं होता है या उन्हें प्रताड़ित किया जाता है, वे परिवार नष्ट-भ्रष्ट हो जाते हैं। स्त्रियाँ जिन लोगों को शाप देती हैं, वे विष देकर मारने के समान स्वतः ही नष्ट हो जाते हैं। दुःखी लोगों एवं स्त्रियों की हाय कभी नहीं लेनी चाहिए। पति-पत्नी की पारस्परिक प्रसन्नता से उनके घर पैदा होने वाली सन्तान भी कुल का यश बढ़ाने वाली होती है। वस्तुतः पूरा परिवार स्त्री की प्रसन्नता पर ही टिका हुआ है।

आचार्य जी ने पंचमहायज्ञों की भी विस्तार से चर्चा की। मनुस्मृति के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को नियमित रूप से निम्नलिखित पाँचों महायज्ञ करने चाहिये-

अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम्।
होमो दैवो बलिर्भौतो नृयज्ञोऽतिथिपूजनम्।।७०।।

अर्थात् पढ़ना-पढ़ाना तथा सन्ध्योपासना करना ब्रह्मयज्ञ है, माता-पिता आदि की सेवा-सुश्रूषा पितृयज्ञ है, प्रातः-सायं हवन करना देवयज्ञ है, पशु-पक्षियों, कीट-पतंगों और भृत्यों-कुष्ठियों को भोजन का भाग देना भूतयज्ञ (बलिवैश्वदेवयज्ञ) है और अतिथियों का सत्कार करना, नृयज्ञ या अतिथि यज्ञ है। इन यज्ञों के करने से पुण्य की वृद्धि होती है। आचार्य जी ने अग्निहोत्र के लाभों की चर्चा

thearyasamaj.org

चारों आश्रमों में गृहस्थाश्रम को श्रेष्ठ बताते हुए महर्षि मनु का यह श्लोक समझाया-

यथा वायुं समाश्रित्य वर्तन्ते सर्व जन्तवः।
तथा गृहस्थमाश्रित्य वर्तन्ते सर्व आश्रमाः।।७७।।

अर्थात् जैसे वायु के आश्रय से सब जीवों के प्राणों की रक्षा होती है, वैसे ही गृहस्थ के आश्रय से ब्रह्मचारी, वानप्रस्थी एवं संन्यासी का निर्वाह होता है।

आचार्य सोमदेव जी ने मनुस्मृति से अलग हटकर बीच-बीच में अवसरानुकूल अन्य विचार-बिन्दुओं पर भी अपनी टिप्पणियाँ दी हैं। भर्तृहरि के एक श्लोक की व्याख्या करते हुए उन्होंने कई महत्त्वपूर्ण प्रश्नों के सार्थक उत्तर दिये। इसी तरह परोपकारिणी सभा के कोषाध्यक्ष श्री सुभाष नवाल परिवार द्वारा आयोजित सम्मान समारोह के अवसर पर पारिवारिक सम्बन्धों की मधुरता और कर्त्तव्यपरायणता विषयक मननीय उद्बोधन देकर आचार्य जी ने समाज के सभी घटकों को प्रभावित किया।

डॉ. धर्मवीर जी की मुखाकृति पर यात्राओं की थकान उतना प्रभाव नहीं छोड़ती, जितनी समसामयिक समस्याओं की प्रश्नाकुलता। गोमांस और गोहत्या को लेकर पिछले दिनों जो उहापोह देश की राजनीति तथा अर्थनीति में उबाल लेकर आया, उसकी चर्चा करते हुए उन्होंने प्रातःकालीन स्वाध्याय सत्र में सभी साधकों को वस्तुस्थिति से परिचित कराया। भारत के इतिहास की भूली-बिसरी कड़ियों की जानकारी के साथ ही कसाईखानों की निर्ममता तथा गोमांस निर्यात के अन्तर्राष्ट्रीय षड्यन्त्र की भयावहता का जो चित्र उन्होंने खींचा, उसने सभी के रोंगटे खड़े कर दिये। गोमांस को कृषि उत्पाद के रूप में मिलने वाली सुविधाओं ने जो अवैध व्यावसायिक तन्त्र खड़ा किया है, उसके विरुद्ध समय रहते सामान्य व्यक्ति को जागरूक होना चाहिए।

डॉ. धर्मवीर जी ने आजकल के चर्चित विषय 'चर्च की बोखलाहट' को भी प्रातःकालीन स्वाध्याय के अन्तर्गत एक विचारोत्तेजक चिन्तन के रूप में प्रस्तुत किया। वैसे इसी विषय पर उनका विस्तृत सम्पादकीय 'परोपकारी' पाक्षिक के अप्रैल (प्रथम) अंक में छपा है। आपने बताया कि श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा धर्मप्रचार के लिए विदेशों से आने वाली अपार धन राशि पर रोक लगाते ही चारों ओर चीख-पुकार मच गई है। मुसलमानों और ईसाइयों ने इस देश के प्रति कभी अपनी वफादारी नहीं दिखाई है। धर्म परिवर्तन का सहारा लेकर वे हमारे निर्धन होने की कमजोरी को भुनाते रहे हैं। हिन्दू इस समस्या को न व्यक्ति के स्तर पर हल कर पाए, न समूह के स्तर पर। अब जागरण की आवश्यकता है। धर्मवीर जी ने श्री राममनोहर लोहिया के धर्म और राजनीति से सम्बन्धित समीकरण को भी स्पष्ट किया।

स्वामी विष्वङ् जी ने एक प्रवचन में आत्मा के स्वभाव की चर्चा करते हुए बताया कि दुःख के प्रति द्वेष रखना और सुख की आकांक्षा करना, जीवात्मा का स्वाभाविक गुण है। हमारी विवशता यह है कि हम दुःख को पहचान नहीं पाते और दुःख से किये जाने वाले द्वेष से ही दुःखी हो जाते हैं। वस्तुतः सुख-दुःख के भेद को समझना ही योग है। यही विवेक है। यह विवेक हमारे जीवन में उपस्थित होता है, पर श्मशान वैराग्य की तरह यह अधिक टिक नहीं पाता। हमारा कर्त्तव्य है कि जो हमारे हाथ में आ चुका है, उसकी सुरक्षा करें और अवसर मिलने पर नए के लिए प्रयत्न करें। सुखी होने का यही गुरु मन्त्र है।

सायंकालीन स्वाध्याय-विवेचन, विश्लेषण और निर्देशनः- सायंकालीन स्वाध्याय सत्र में **आचार्य सोमदेव जी** ने बताया कि मूर्तिपूजा, नाम स्मरण, तिलक इत्यादि को जो लोग मुक्ति का साधन मानते हैं, उनकी महर्षि दयानन्द जी ने 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' में भर्त्सना की है। मूर्तिपूजा का वेद में निषेध किया गया है। इसी तरह अल्पबुद्धि वाले लोग '**आकृष्णेन रजसा.....**' इत्यादि मन्त्रों का सूर्यादि ग्रहों की पीड़ा के शमन हेतु प्रयोग करते हैं। '**शन्नो देवीरभीष्टय.....**' मन्त्र की भी यही स्थिति है। ग्रह-शान्ति के नाम पर पण्डितों और पुरोहितों का अच्छा व्यवसाय चलता है। महर्षि दयानन्द जी ने नवग्रह पूजा विधान को व्यर्थ माना है। मनुष्य दुःख से निवृत्ति की कामना करे- यह स्वाभाविक है, परन्तु इसके लिए पुरुषार्थ करना चाहिए, ग्रह शान्ति के नाम पर स्वयं को पाखण्ड के हवाले नहीं करना चाहिए। जो परमात्मा विज्ञानस्वरूप है, वही हमारा अज्ञान दूर कर सकता है। हमें उसे ही अपने अन्तःकरण में खोजना चाहिए।

आचार्य सोमदेव जी ने 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' के नए अध्याय को प्रारम्भ करते हुए वेदादि शास्त्रों के पढ़ने-पढ़ाने तथा सुनने-सुनाने के अधिकारों पर चर्चा की। उन्होंने बताया कि दयानन्द जी ने वेदों के प्रमाण देकर स्पष्ट लिखा है कि वेदों के पढ़ने-पढ़ाने का अधिकार मनुष्य मात्र को है। ईश्वर आज्ञा देता है कि 'हे मनुष्यो! जिस प्रकार मैं तुम्हें चारों वेदों का उपदेश देता हूँ, उसी प्रकार तुम भी उनको

thearyasamaj.org

पढ़कर सब मनुष्यों को पढ़ाया और सुनाया करो।' सोमदेव जी ने बताया कि वर्णाश्रम व्यवस्था भी गुण-कर्मों के आचार विभाग से होती है, जन्म के आधार पर नहीं। मनुस्मृति भी यही कहती है। महर्षि दयानन्द जी ने 'पठन-पाठन' विषयक कुछ निर्देश भी दिये हैं, जिनमें स्वर और वर्णों के उच्चारण से सम्बन्धित स्थानगत एवं प्रयत्नगत सावधानियाँ रखने की बात कही गई है। यही बात शब्दों के प्रयोग पर भी लागू होती है। माता-पिता का कर्त्तव्य है कि वे अपनी सन्तानों को बोलने, सुनने, चलने, बैठने, उठने, खाने, पीने, विचारने तथा पदार्थों के जानने और जोड़ने आदि की शिक्षा भी दें। वेदों का अर्थ समेत पाठ करना एवं उनमें दी गई शिक्षाओं का पालन करना, श्रेष्ठतम माना गया है। इस प्रकरण में विद्वानों और विद्याहीन व्यक्तियों के लक्षणों की भी चर्चा की गई है।

सायंकालीन प्रवचन शृंखला में **श्री सत्येन्द्रसिंह जी** ने महर्षि दयानन्द जी की कालजयी कृति सत्यार्थ प्रकाश की प्रासंगिकता पर मननीय व्याख्यान दिया। विश्व के सभी धर्मों ने वेदों को प्राचीनतम मानकर उनमें दिए मानवोपयोगी सिद्धान्तों को स्वीकार किया है। हमारे ऋषियों ने कहा है कि- अभ्युदय और निःश्रेयस् प्राप्ति के लिए आचरण की पवित्रता और परिवेश के प्रति जागरूकता का होना अनिवार्य है। सत्यार्थप्रकाश के तीसरे समुल्लास की पूर्व पीठिका से इस नये व्याख्यान सत्र को जोड़ते हुए आचार्य सत्येन्द्रसिंह जी ने महर्षि दयानन्द द्वारा दिये गए ब्रह्मचर्याश्रम के आवश्यक नियमों का विस्तार से परिचय दिया। ब्रह्मचारी के लिए शक्ति संचय, विद्या प्राप्ति एवं यम-नियमों का पालन अनिवार्य कर्त्तव्य की तरह है। नित्यकर्म में अनध्याय कभी नहीं होता। जिसने ब्रह्मचर्याश्रम में संयम के माध्यम से अपने तन, मन एवं चिन्तन को निर्मल एवं सबल कर लिया है, वही जीवन की अग्रिम यात्रा के लिए योग्य माना जाएगा। मनुस्मृति के प्रसिद्ध श्लोक '**अभिवादनशीलस्य...**' का उल्लेख करके दयानन्द जी ने एक शाश्वत सत्य विश्व के सामने रखा है। उसका पालन करके पूरा विश्व लाभन्वित हो सकता है।

विविध-आयोजन, प्रयोजन और प्रस्तुतिकरणः- ऋषि उद्यान में मुख्य स्वाध्याय प्रवचनों के अतिरिक्त बीच-बीच में प्रातः-सायं वानप्रस्थियों, ब्रह्मचारियों एवं अन्य महानुभावों को भी अपने विचारों और गीतों को प्रस्तुत करने का अवसर मिलता है। इस क्रम में पिछले पखवाड़े ब्र. महेन्द्र एवं ब्र. काव्य प्रकाश के मधुर भक्ति गीतों का आनन्द सभी साधकों ने लिया। **श्री रमेश मुनि जी** ने जीवन के परम लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रलय-चिन्तन एवं मृत्युबोध की प्रभावशाली साधना-पद्धति का विस्तार से विश्लेषण किया। ब्र. दीपक ने गोहत्या नियमन के प्रश्न को उठाकर डॉ. अम्बेडकर, संविधान, मांस-भक्षण, सरकारी नीति एवं जनता की मानसिकता का विश्लेषण किया तथा महर्षि दयानन्द के मत और वैदिक मन्त्रों की सार्थक चर्चा की। **श्री ओममुनि जी** ने आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार एवं प्रभाव से सम्बन्धित अपने जीवन की रोचक और रोमांचक घटनाएँ सुनाकर संस्था के प्रति निष्ठा और समर्पण भावना को तो प्रकट किया ही, साथ ही लोगों को प्रेरणा भी दी।

प्रेरणाएँ तो प्रतिक्षण प्रतीक्षा कर रही हैं कि जाग्रत व्यक्ति आएँ और उनसे प्रेरित हों। परमात्मा ने हमें साधन के रूप में बहुत कुछ दिया है, केवल मूर्खता छोड़कर उसे पहचानना है। यही कल्याण का मार्ग है-

कंचन-सी काया मिली, मन नवनीत समान।
प्रज्ञा मिली ऋतम्भरा, मूर्ख इन्हें पहचान।।

डॉ. धर्मवीर जी का प्रचार-कार्यक्रम- सम्पन्न कार्यक्रमः- (क) ३१ मार्च व १ अप्रैल २०१५:- खलीलाबाद (गोरखपुर, उ.प्र.) आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव में व्याख्यान।

(ख) २ अप्रैल २०१५:- मगहर (कबीर की जन्मस्थली, उ.प्र.) में व्याख्यान।

(ग) ३ से ५ अप्रैल २०१५:- यमलार्जुनपुर, केसरगंज, बहराइच (उ.प्र.) के कार्यक्रम में मार्गदर्शन।

(घ) ९ से १२ अप्रैल २०१५:- आर्यसमाज सै.-१५, फरीदाबाद के कार्यक्रम में प्रवचन।

(ङ) १६ से १९ अप्रैल २०१५:- आर्यसमाज सी-ब्लॉक, जनकपुरी, दिल्ली के कार्यक्रम में व्याख्यान।

(च) २३ से २६ अप्रैल २०१५:- आर्यसमाज मयूर विहार, दिल्ली के कार्यक्रम में मार्गदर्शन।

(छ) २६ से २९ अप्रैल २०१५:- गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार की गोष्ठी में व्याख्यान।

आगामी कार्यक्रम- (क) १८ से २४ मई २०१५:- आर्यसमाज भाग-द्वितीय, ग्रेटर कैलाश, दिल्ली के योग शिविर में मार्गदर्शन।

thearyasamaj.org

कात्यायन श्रौतसूत्र का अध्यापन

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा के द्वारा ऋषि उद्यान, अजमेर के महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल में वर्षों से संस्कृत व्याकरण और दर्शनों का अध्यापन कार्य सुचारु रूप से चल रहा है। इसी क्रम में महर्षि कात्यायन द्वारा प्रणीत **श्रौतसूत्र** (आचार्य कर्क भाष्य सहित) का **आचार्य शक्तिनन्दन मीमांसा तीर्थ** द्वारा १ जुलाई २०१५ से विधिवत् नियमित रूप से अध्यापन कराया जाएगा।

सूत्र ग्रन्थों में प्रसिद्ध **श्रौतसूत्र** ग्रन्थ कर्मकाण्ड को ही मुख्यत: प्रतिपादित करता है, अत: जो कर्मकाण्ड विषयक जिज्ञासु हैं, उनके लिए विशेष उपयोगी है। यह ग्रन्थ २६ अध्यायों में विभक्त है। आधुनिक काल में हम पञ्चमहायज्ञों तक ही सिमट कर रह जाते हैं, पर इस शास्त्र के अध्यापन से अन्य अनेक यज्ञ, जैसे- दशपूर्णमास-चातुर्मास्यादि का स्वरूप समझने का अच्छा अवसर प्राप्त होगा। यह ग्रन्थ लगभग ६ मास में सम्पूर्ण हो जाएगा।

इस काल में ऋषि उद्यान में प्रतिदिन यज्ञोपरान्त उपदेश व प्रवचन का लाभ भी प्राप्त हो सकेगा तथा विभिन्न समयों पर विविध विषयों पर विद्वानों द्वारा कक्षाएँ भी होती रहेंगी। ब्रह्मचारियों, वानप्रस्थियों, संन्यासियों व अन्य असमर्थों हेतु निवास और भोजन व्यवस्था नि:शुल्क है। समर्थ प्रतिभागी इच्छानुसार सहयोग कर सकते हैं। माताओं व बहनों के निवास की व्यवस्था पृथक् रहेगी।

सम्पर्क सूत्र - स्वामी विष्वङ् परिव्राजक- ०९४१४००३७५६ **समय**- सायं ५.३० से ६.०० बजे तक।

पता - ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर-३०५००१ (राज.)

email : psabhaa@gmail.com

वैदिक साहित्य पर विशेष छूट

दानी महानुभावों के विशेष सहयोग से वैदिक पुस्तकालय, अजमेर द्वारा प्रकाशित रु. १६३५/- मूल्य की निम्नलिखित पुस्तकों का एक सैट ग्राहकों को आधे मूल्य (५० प्रतिशत) में अर्थात् रु. ८१७/- में दिया जा रहा है। पुस्तकों को डाक द्वारा मँगाने पर डाक व्यय के रु. १८३/- अतिरिक्त सहित कुल राशि रु. १०००/- में ग्राहकों को देय होगा।

पुस्तकों के सैट उपलब्धता रहने तक प्राथमिकता के आधार पर देय होंगे।

क्र. सं.	पुस्तक सं.	पुस्तक का नाम	मूल्य
१.	१२	ऋग्वेद भाषा भाष्य-१२ पुस्तक-१ सैट	६१०.००
२.	२	यजुर्वेद भाषा भाष्य-२ पुस्तक-१ सैट	४७५.००
३.	३	दयानन्द ग्रन्थमाला-३ पुस्तक- १ सैट	५५०.००
	१७	**योग**	**१६३५.००**

पुस्तकें मँगाने हेतु धनराशि-एम.ओ., डिमाण्ड ड्राफ्ट या ऑनलाईन द्वारा

खातेदार-वैदिक पुस्तकालय, अजमेर

बचत खाता संख्या- 0008000100067176,

बैंक- पंजाब नेशनल बैंक, कचहरी रोड, अजमेर

आई.एफ.एस.सी. संख्या PUNB 0000800 के माध्यम से भेज सकते हैं।

तर्क के बिना कोई भी विद्या किसी मनुष्य को प्राप्त नहीं होती और विद्या के बिना पदार्थों से उपयोग भी कोई नहीं ले सकता।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.५६

thearyasamaj.org

जिज्ञासा समाधान - ८७

- आचार्य सोमदेव

जिज्ञासा- पिछले अंक में हमने डॉ. वेदप्रकाश गुप्ता (वाशी नवी मुम्बई) द्वारा पूछे गये पाँच प्रश्नों में से पहले एक प्रश्न का उत्तर लिखा था। अब उनके अन्य प्रश्नों का समाधान लिखते हैं। पाठकों की सुविधा के लिए, उनके प्रश्नों को यहाँ पुनः उद्धृत करते हैं-

२. श्रुतियाँ कितनी हैं, उनके क्या-क्या नाम हैं, उनके लेखक/सृजन कर्त्ता कौन हैं, उनमें किस विषय का ज्ञान है?

३. अब तक कितने मनु हुए हैं, उनके क्या नाम हैं, उनमें से प्रत्येक ने किस प्रकार का ज्ञान दिया? श्रीमद् भगवद्‌गीता में योगीराज श्रीकृष्ण ने चौदह मनु को रेफर किया है, परन्तु इससे अधिक कुछ नहीं कहा।

४. उपनिषद् ग्यारह हैं, उनके नाम मेरे पास हैं, लेकिन प्रत्येक उपनिषद् में किस-किस प्रकार का ज्ञान है, वह नहीं मिलता या प्राप्त है।

५. हमारे चार वेद हैं और वे चारों ज्ञान के भण्डार हैं, लेकिन श्रीकृष्ण ने श्रीमद् भगवद्‌गीता में सामवेद को ही अपनी विभूति क्यों कहा है?

समाधान- महर्षि दयानन्द के अनुसार वेद को ही श्रुति कहते हैं, इस आधार पर श्रुतियों की संख्या चार ही रहेंगी अर्थात् श्रुतियाँ चार हैं। महर्षि दयानन्द ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका के वेदोत्पत्ति विषय में प्रश्नोत्तर पूर्वक लिखते हैं-

''प्रश्न- वेद और श्रुति ये दो नाम ऋग्वेदादि संहिताओं के क्यों हुए हैं? उत्तर- अर्थभेद से। क्योंकि एक 'विद' धातु ज्ञानार्थ है, दूसरा 'विद' सत्तार्थ है, तीसरे 'विदलृ' का अर्थ लाभ हैं, चौथे 'विद' का अर्थ विचार है। इन चार धातुओं से करण और अधिकरण कारक में 'घञ्' प्रत्यय करने से 'वेद' शब्द सिद्ध होता है तथा 'श्रु' धातु श्रवण अर्थ में है। इससे करण कारक में 'क्तिन्' प्रत्यय के होने से 'श्रुति' शब्द सिद्ध होता है। जिनके पढ़ने से यथार्थ विद्या का विज्ञान होता है, जिनको पढ़के विद्वान् होते हैं, जिनसे सब सुखों का लाभ होता है और जिनसे ठीक सत्यासत्य का विचार मनुष्यों को होता है, इससे ऋक्संहितादि का वेद नाम है। वैसे ही सृष्टि के आरम्भ से आज पर्यन्त और ब्रह्मादि से लेके हम लोग पर्यन्त। जिससे सब विद्याओं को सुनते आते हैं, इससे वेदों का 'श्रुति' नाम पड़ा है, क्योंकि किसी ने वेदों के बनाने वाले देहधारी को साक्षात् कभी नहीं देखा। इस कारण से जाना गया कि वेद निराकार ईश्वर से ही उत्पन्न हुए हैं और सुनते-सुनाते ही आज पर्यन्त सब लोग चले आते हैं।''

महर्षि के इन वचनों से स्पष्ट हो रहा है कि वेद ही श्रुति है। अब रही नाम की बात तो वह भी सरलता से पता चलता है, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद ये श्रुतियों के नाम हैं।

इन श्रुतियों का सृजन कर्त्ता कोई देहधारी मनुष्य नहीं था। इनका सृजन कर्त्ता तो निराकार, सर्वज्ञ परमेश्वर ही है। इनका ज्ञान परमेश्वर ने आदि सृष्टि में ऋषियों को दिया। किन ऋषियों ने कब इस श्रुतिरूपी ज्ञान को लिपिबद्ध किया अर्थात् लिखा, इसका इतिहास प्राप्त नहीं है, अर्थात् हम यह नहीं बता सकते कि इनको लिखने वाले ऋषि कौन थे और इनको किस समय लिखा।

इनमें किस विषय का ज्ञान है, इसको विस्तार से जानने के लिए महर्षि दयानन्द द्वारा लिखित ऋग्वेदादि-भाष्यभूमिका का अध्ययन करें।

श्रुति के विषय में हमने महर्षि दयानन्द की मान्यता को रखा, जिसको हम भी स्वीकारते हैं। अब अन्य विद्वानों की मान्यता को यहाँ थोड़ा लिखते हैं। कुछ विद्वान् श्रुति से मन्त्र भाग व ब्राह्मण भाग दोनों लेते हैं, अर्थात् मूल वेद और उसके व्याख्या ग्रन्थ शतपथ आदि ब्राह्मण ग्रन्थ। उनका कहना है- **'श्रूयतेऽनया सा श्रुतिः'** जिससे अर्थ को सुना जाये अर्थात् जाना जाये। ऐसी व्याख्या करके वे दोनों अर्थ ग्रहण करते हैं।

ऐसी मान्यता वाले विद्वान्, जब कभी श्रुति की बात आती है तो व्याख्यान ग्रन्थ ब्राह्मणों का भी प्रमाण मानते हैं, जबकि महर्षि दयानन्द श्रुति से वेद को प्रमाण मानते हैं। इस विषय में आर्यसमाज के योग्य विद्वान् पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी ने भी अपना विचार रखा है, वे लिखते हैं- ''हमारे विचार से 'श्रुति' शब्द का प्रधान अर्थ गुरु परम्परा से नियमतः अधीयमान मन्त्रों का ही है, परन्तु व्याख्येय-व्याख्यानसम्बन्ध रूप लक्षणा से इनका प्रयोग ब्राह्मण वचनों के लिए भी होता है।''

३. अब तक कितने मनु हुए? इस विषय में सर्वांशरूप से तो कुछ नहीं कह सकते। मनु नाम के कितने ऋषि वा मनुष्य हुए, यह कहना कठिन है। हाँ, मनुस्मृति के रचनाकार महर्षि मनु वा स्वायम्भुव मनु का इतिहास तो अनेकत्र उपलब्ध होता है, जो कि आदि सृष्टि में हुए हैं, किन्तु और कितने तथा कौन-कौन नाम वाले मनु हुए, इसका इतिहास प्राप्त नहीं है। हाँ, अनार्ष ग्रन्थ भागवत पुराण में चौदह

thearyasamaj.org

मनुओं का व उनके पुत्रादि का वर्णन मिलता है, किन्तु यह तो उनकी कल्पना ही लगती है।

मन्वन्तर रूपी काल के नाम तो उपलब्ध हैं, जैसे दिनों के नाम रवि, सोम एवं महिनों के नाम चैत्र, ज्येष्ठ आदि हैं, उसी प्रकार चौदह मन्वन्तरों के भी नाम हैं- १. स्वायम्भुव, २. स्वरोचिष, ३. उत्तम, ४. तामस, ५. रैवत, ६. चाक्षुष, ७. वैवस्वत, ८. सावर्णि, ९. दक्षसावर्णि, १०. ब्रह्मसावर्णि, ११. धर्मसावर्णि, १२. रुद्रसावर्णि, १३. देव सावर्णि, १४. इन्द्रसावर्णि। ये मनु हैं, अथवा ये चौदह मन्वन्तर के नाम हैं।

इस विषय में अनार्ष ग्रन्थ भागवत पुराण में लिखा है-

राजंश्चतुर्दशैतानि त्रिकालानुगतानि ते।
प्रोक्तन्येभिर्मितः कल्पो युगसाहस्रपर्ययः।।

- ८.१३.३६

हे राजन! ये चौदह मन्वन्तर भूत, वर्तमान और भविष्य- तीनों ही कालों में चलते रहते हैं। इन्हीं के द्वारा एक सहस्र चतुर्युगी वाले कल्प के समय की गणना की जाती है।

ये चौदह नाम मनु के मिलते हैं और ये समय (काल) के नाम हैं। काल जड़ है, चेतन नहीं है। जड़ होते हुए ये चेतन की भाँति किसी प्रकार का ज्ञान देने में असमर्थ हैं, ज्ञान नहीं दे सकते।

४. आपने कहा 'उपनिषदों में किस प्रकार का ज्ञान है? वह नहीं मिलता अर्थात् क्या विषय है, यह नहीं मिलता' यह कहना उपयुक्त नहीं, क्योंकि उपनिषदों को पढ़ने से इनमें आये विषय का स्पष्ट ज्ञान होता है। उपनिषदों में मुख्य आत्मा-परमात्मा का विषय है। आत्मा व परमात्मा के स्वरूप को उपनिषद् बताते हैं। इनकी प्राप्ति कैसे होती है, यह उपनिषद् बताते हैं, प्रकृति का वर्णन भी उपनिषदों में आया है। पुनर्जन्म, सूक्ष्मशरीर, प्राण, इन्द्रियाँ, मन, बुद्धि आदि इन सबके विषय में उपनिषद् वर्णन करते हैं। इतना सब उपनिषदों से ज्ञात होता है, इससे आप उपनिषदों के विषय को जान सकते हैं।

५. चारों वेद ज्ञान के भण्डार हैं, यह ठीक है, चारों ही वेदों का बराबर महत्त्व है। वेदों के अपने विषय हैं- ज्ञान, कर्म, उपासना, विज्ञान, इनमें से किसी को सभी प्रिय हो सकते हैं और किसी को एक या दो। हो सकता है, जिस समय कृष्ण जी ने यह कहा, उस समय उनको उपासना प्रिय हो, जो कि सामवेद का विषय है।

आपको बता दें कि साम नाम केवल सामवेद का ही नहीं है, अपितु चारों वेदों में जो ऋचाएँ स्वर सहित गाई जाती हैं, उनका नाम साम है। इस आधार पर केवल सामवेद ही विभूति नहीं है, अपितु चारों वेदों में गायी जाने वाली सभी ऋचाएँ विभूति हैं। श्रीकृष्ण जी योगीराज थे, योगीजन उपासना प्रिय होते हैं, उपासना की दृष्टि से उन्होंने सामवेद को अधिक महत्त्व दिया होगा। अस्तु।

- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

आर्यजगत् के समाचार

१. आवश्यकता- रामलाल कपूर ट्रस्ट द्वारा संचालित पाणिनि महाविद्यालय में एक अनुभवी आचार्य की आवश्यकता है, जो महर्षि दयानन्द द्वारा निर्दिष्ट पाठ्यक्रम का अध्यापन कर सके। आवास व भोजन निःशुल्क रहेगा। न्यूनतम दक्षिणा का स्पष्ट उल्लेख करें। आर्ष-पाठविधि से पढ़े हुए व्यक्ति की प्राथमिकता होगी। दि. १५ जून २०१५ तक इच्छुक व्यक्ति का आवेदन-पत्र कार्यालय में पहुँच जाना चाहिए, जिसमें आवेदक की योग्यता एवं अध्यापन अनुभव काल का उल्लेख हो। साथ में चरित्र प्रमाण-पत्र भी होना अनिवार्य है। साक्षात्कार हेतु मार्ग व्यय स्वयं वहन करके आना होगा। सम्पर्क- ०१३०-३२९०२७६

२. कार्यालय आरम्भ- दि. २६ अप्रैल २०१५ को ग्राम सुनपेड़, तहसील बल्लबगढ़, जि. फरीदाबाद, हरि. में श्री धर्मेन्द्र जिज्ञासु (मन्त्री आर्यवीर दल/आर्यसमाज) ने किराये पर कमरा लेकर, आर्यवीर दल/आर्यसमाज सुनपेड़ का कार्यालय तथा ठाकुर किशोरी सिंह वैदिक पुस्तकालय का संचालन आरम्भ किया।

३. शिविर सम्पन्न- आनन्दधाम (गढ़ी आश्रम) उधमपुर, जम्मू-कश्मीर में महात्मा चैतन्यमुनि जी के सान्निध्य में १२ से १९ अप्रैल २०१५ तक निःशुल्क योग-ध्यान-साधना शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर, राजस्थान, दिल्ली, पानीपत, सोनीपत, उत्तराखण्ड तथा बिहार आदि से शिविरार्थियों ने भाग लिया।

४. वार्षिकोत्सव- आर्यसमाज भीमगंज मण्डी, कोटा, राज. में दि. १५ से १७ मई २०१५ तक वार्षिक उत्सव का आयोजन किया गया है। इस उत्सव में आर्यसमाज में धर्मधुन की लगन, मानव मूल्यों की पुनर्स्थापना, वैदिक विद्या द्वारा समाज, राष्ट्र एवं परिवार के कल्याण पर विशेष चर्चा होगी, जिसमें भारतवर्ष के विभिन्न राज्यों के विद्वान् अपने विचार व्यक्त करेंगे।

५. प्रवचन आयोजित- आर्यसमाज मानसरोवर, जयपुर, राज. में शाश्वत वैदिक संस्कृति के घटनाक्रमों को सामने लाने का प्रयास करते हुए कठोपनिषद् कथा एवं इसकी गूढ़ अन्तर्कथाओं पर सुग्राह्य भाषा में डी.ए.वी.

शेष भाग पृष्ठ संख्या ९ पर.....

thearyasamaj.org

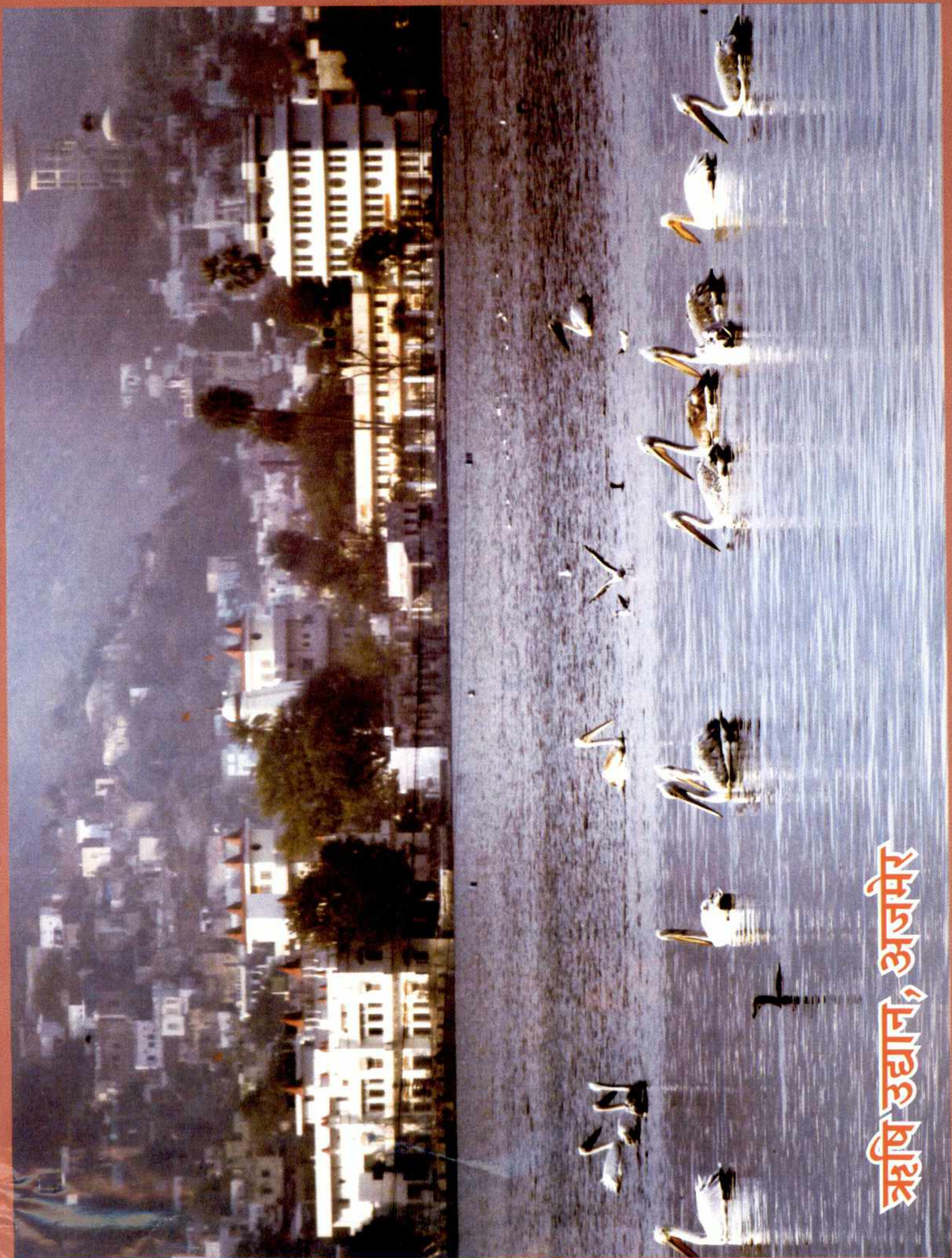

thearyasamaj.org

आर जे/ए जे/80/2015-2017 तक प्रेषण : १५ मई, २०१५ ३९५९/५९

पं. श्याम जी कृष्ण वर्मा

संस्कृत प्रोफेसर, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी

संस्कृत के अद्वितीय विद्वान् तथा क्रान्तिकारी देशभक्त श्याम जी कृष्ण वर्मा का जन्म कच्छ राज्य के मांडवी नामक ग्राम में कार्तिक कृष्ण २ सं. १९१४ वि. (५ अक्टूबर १८५७ ई.) में हुआ। श्याम जी का जन्म एक साधारण परिवार में हुआ था। कुशाग्र बुद्धि होते हुये भी उनकी शिक्षा की कोई समुचित व्यवस्था नहीं हो सकी थी। अक्टूबर १८७४ में श्याम जी की महर्षि दयानन्द जी से प्रथम भेंट बम्बई की भाटिया धर्मशाला में हुई। महर्षि जी इस मेधावी किशोर की अध्ययन प्रवीणता को पहचान गये तथा उनके संस्कृत शिक्षण की समुचित व्यवस्था कर दी। महर्षि जी की प्रेरणा से ही श्याम जी का विवाह एक सम्पन्न पुरुष सेठ छबीलदास भंसाली की कन्या भानुमती के साथ हो गया। उच्चतर अध्ययन के लिये महर्षि जी ने श्याम जी को १८७९ मार्च में इंग्लैण्ड भेजा। यहाँ आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में ये संस्कृत के प्राध्यापक बन गये तथा उच्चतर अध्ययन भी करते रहे। महर्षि जी का श्याम जी से निरन्तर पत्र व्यवहार होता रहता था।

१८८५ ई. में बैरिस्टर की परीक्षा में उत्तीर्ण होकर श्याम जी स्वदेश आये। यहाँ रतलाम, उदयपुर, जूनागढ़ आदि अनेक रियासतों के प्रधानमन्त्री पद पर कार्य करते रहे। कुछ समय पश्चात् श्याम जी की राजनैतिक और क्रान्तिकारी गतिविधियाँ बढ़ गईं। अब ये पुन: लन्दन पहुँचे और इण्डियन होमरूल सोसायटी की स्थापना (१८ फरवरी १९०५) की तथा इण्डियन सोशियोलोजिस्ट नामक पत्र निकाला। विनायक दामोदर सावरकर जैसे क्रान्तिकारी देशभक्त श्याम जी के ही शिष्य थे। अन्तत: श्याम जी को इग्लैण्ड से निर्वासित होना पड़ा और स्विट्जरलैण्ड के जिनेवा नगर में ३१ मार्च १९३० को उनका निधन हुआ।

२५ दिसम्बर १८८५ ई. के अधिवेशन में पं. मोहनलाल विष्णुलाल पण्ड्या के द्वारा सभा के मन्त्री पद स्वीकार कर लेने पर श्याम जी कृष्ण वर्मा को उपमन्त्री नियुक्त किया गया। जब वैदिक यन्त्रालय अजमेर स्थानान्तरित किया गया तो पं. श्याम जी कृष्ण वर्मा उसके अधिष्ठाता पद पर रहे।

प्रेषक:
परोपकारिणी सभा
दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर
(राजस्थान) - ३०५००१

Design@ Mittal 9829797513